सम्पादक

डॉ. हारून रशीद सिद्दीकी

सहायक

मु. गुफ़रान नदवी

मु. हसन अन्सारी

हबीबुल्लाह आज़मी

कार्यालय

मासिक सच्चा राही

मजलिसे सहाफ़त व नशरियात

पो0 बॉ0 नं0 93

टैगोर मार्ग, नदवतुल उलमा, लखनऊ

फोन : 0522–2740406

: 0522–2741221

E-mail :
nadwa@sancharnet.in

सहयोग राशि

[illegible]	[illegible] 12/-
[illegible]	[illegible] 120/-
[illegible]	[illegible] 500/-
[illegible]	30 [illegible]

चेक / ड्राफ्ट पर यह लिखें

"सच्चा राही"

पता

सेक्रेटरी, मजलिसे सहाफ़त व नशरियात

नदवतुल उलमा, लखनऊ, 226007

मुद्रक एवं प्रकाशक अतहर हुसैन द्वारा काकोरी आफसेट प्रेस से मुद्रित एवं दफ्तर मजलिसे सहाफ़त व नशरियात नदवतुल उलमा, लखनऊ से प्रकाशित।

Visoin Computers - 98389[illegible]

हिन्दी मासिक

सच्चा राही

सामाजिक एवं साहित्यिक — लखनऊ

अप्रैल, 2009 वर्ष 8 अंक 2

सय्यिदुना अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी (रह़0) का नसब

अ़ब्दुल क़ादिर बिन मूसा बिन अ़ब्दुलाह बिन यह़या अज़्ज़ाहिद बिन मुह़म्मद बिन दाउद बिन मूसा अलजून बिन अ़ब्दुल्लाह अल मह़ज़ बिन अलह़सन मुसन्ना बिन अलह़सन रज़ि0 बिन अ़ली रज़ि0 बिन अबी तालिब।

अप्रैल 2009

आपके पते के साथ जो खरीदारी नम्बर है अगर उसके नीचे लाल या काली लाइन है तो समझें कि आपका सालाना चन्दा खत्म हो चुका है। अतः आप जल्द ही अपना चन्दा भेजने का कष्ट करें। और मनीआर्डर कूपन पर अपना खरीदारी नम्बर अवश्य लिखें। अगर आपका फ़ोन या मोबाइल हो तो उसका नम्बर भी लिखें।

विषय एक दृष्टि में

मुआशरे का हाल और हमारी जिम्मेदारी	सम्पादकीय	3
कुर्आन की शिक्षा	मौ0 मु0 मंजूर नोमानी	5
प्यारे नबी की प्यारी बातें	अमतुल्लाह तस्नीम	7
जग नायक	मौ0 स0 म0 राबे हसनी	9
कारवाने ज़िन्दगी	मौ0 सै0 अबुल हसन अली हसनी	11
पड़ोसी के हुकूक	अल्लामा सैयद सुलैमान नदवी रह0	13
जरूरियाते दीन कैसे पढ़ाएं	डा0 हारून रशीद	15
आप के प्रश्नों के उत्तर	इदारा	17
एक करम फर्मा का खत	इदारा	20
आख़िरत की जिन्दगी	मौ0 मुज़ीबुल्लाह नदवी	21
तरबूज़	हबीबुल्लाह आजमी	23
हरपीज़	डा0 जीतेन्द्र	24
भूकम्प या कियामत	अयाज अमहद फारूकी	25
भारत का संक्षिप्त इतिहास	इदारा	26
हम कैसे पढ़ायें	डॉ0 सलामतुल्लाह	29
लिखने की कला	शमीम इक्बाल खाँ	31
सुल्तान सलाहुद्दीन अय्यूबी	इरशाद अली खाँ	35
हिन्दी लिपि में उर्दू शब्दों का उच्चारण	इदारा	38
आख़िर कुरआन क्यों न पढ़ें	विशेश्वर सांकृत्यायन	39
अतंर्राष्ट्रीय समाचार	डॉ0 मुईद अशरफ	40

मुआशरे का हाल और हमारी ज़िम्मेदारीयां

डा० हारून रशीद सिद्दीकी

समस्त हृदय तो घायल है
मरहम कहां किधर लगे।

आप शहर में रहते हों या दीहात में घर से बाहर निकलें बच्चे क्रीकेट खेल रहे होंगे या गुल्ली डन्डा, रास्ता चलने वाले के लिए दोनों दुशवारियां पैदा करते हैं, हमारी ज़िम्मेदारी है कि हम आपस में मिल बेठकर बच्चों के खेलने का नज़्म (प्रबन्ध) करें और उन्हें वहीं खेलने पर मजबूर करें। बच्चों के माँ बाप को इसमें बढ़ चढ़ कर हिस्सा लेना चाहिये। लेकिन अफ़्सोस कुछ माँ बाप इस को अच्छा नहीं समझते कि उन के बच्चों पर कोई रोक लगे। उनको चाहिये कि अपने बच्चों के सुधार के लिये और राह गीरों को तकलीफ से बचाने के लिये इस पर ध्यान दें।

आप देखेंगे कि कितने लोग अपने घर का कूड़ा करकट रास्ते में डाल देते हैं, हम को चाहिये कि हम इस को नज़र अन्दाज़ न करें ऐसे लोगों से मिलें उन को नम्रता से समझाएं कि कूड़ा कूड़ेदान में डालें दीहात के हों तो अपने घूर में डालें।

आप देखेंगे कि कितने लोग पूरी आवाज़ से रेडियो खोल कर गाने सुनते हैं। पड़ोस में कोई बीमार हो या कोई विद्यार्थी या अध्यापक या लेखक अध्ययन कर रहा हो इस की उन को परवाह नहीं होती। हमको चाहिये कि हम ऐसे लोगों से मिलें और हिक्मत से समझाएं कि आप हल्की आवाज़ के गाने से भी आनन्दित हो सकते हैं तो दूसरों को तक्लीफ़ क्यों पहुंचा रहे है? उन के कड़वे उत्तर का धैर्य पूर्ण नम्र उत्तर देकर उन के हृदय को प्रभावित करने की चेष्ठा करें, हिम्मत न हारें ज़रूरत हो तो बार बार कहें।

आप देखेंगे कि शादी बियाह में या किसी भी ख़ुशी के अवसर पर लाऊड स्पीकर से बड़ी तेज़ आवाज़ से गानों के रिकार्ड बजाए जाते हैं हमारी ज़िम्मेदारी है कि हम ऐसे लोगों से मिलें और उन को समझाएं कि आप को और आप के घर वालों को तथा आप के मेहमानों को हल्की आवाज़ के गानों से भी आनन्द मिल सकता है फिर बहुत तेज़ आवाज़ से महल्ले और गांव के लोगों की नाक में दम करने का क्या फ़ाइदा? मगर यह बातें गाना बाजा के इन्तिज़ाम से पहले ही कहना मुफ़ीद होगा।

आप देखते है कि शादी विवाह या किसी भी ख़ुशी के अवसर पर आतिश बाज़ी (अग्नि क्रीड़ा) में न जाने कितना धन फूंक दिया जाता है। इज़हारे ख़ुशी(प्रसन्नता प्रकटीकरण) में धन फूंकना बे फ़ाइदा बात है फिर इस से फ़ज़ाई क़साफ़त (प्रदूषण) में इज़ाफ़ा होता है, धमाके की आवाज़ कितने हृदय रोगियों को नुक़सान पहुंचाती है लिहाज़ा ख़ुशी के इज़हार का कोई और तरीक़ा अपनाना चाहिये हमारी ज़िम्मेदारी है कि हम मिल बैठ कर ऐसी बातों पर ध्यान दें और समाज से इस को दूर करने की कोशिश करें।

आप देखेंगे कि कितने बच्चे और बड़े गुट्खा और मसाला खा रहे हैं, और कितने लोग खैनी खा रहे हैं। पान में तम्बाकू खा रहे है, बीड़ी सिग्रेट के आदी हो गये हैं, क्या आप ने अपने पास पड़ोस में इस का जायज़ा लिया है? आप जायज़ा लेंगे तो आप को बड़ी संख्या इन बुराइयों में मुबतला (ग्रस्त) मिलेगी, हो सकता है आप ख़ुद इस में मुबतला हों। हमारी ज़िम्मेदारी है कि हम मिल बैठ कर परस्पर इस पर बात चीत करें और किसी भी प्रकार से तम्बाकू के इस्तेअ़माल पर रोक लगाएं तम्बाकू की आ़दत हो जाती है तो मुशकिल से छूटती है लेकिन अगर उस के नुक़सानात समझ में आजाएं तो छोड़ना आसान हो सकता है।

कुछ लोग आप के पास पड़ोस में शराब (दारू) के आ़दी मिलेंगे जो अपना स्वास्थ भी बिगाड़ रहे हैं, पैसा भी बरबाद कर रहे हैं और

अपनी सन्तान का मुस्तक़बिल (भविष्य) भी ख़राब कर रहे हैं। हमारी ज़िम्मेदारी है कि हम ऐसे लोगों से मिलें और पूरी हमदर्दी से उनको इसके नुकसानात से वाक़िफ़ (अवगत) कराते हुए शराब छोड़ने पर आमादा करें और शराब छोड़ने की तदबीरें बताएं।

हम मुसलमान हैं हम को अपने घर फिर पास पड़ोस का जायज़ा लेना चाहिये कि सभी बालिग़ लोग नमाज़ पढ़ते हैं या नहीं आप देखेंगे कि बहुत से बालिग़ लोग नमाज़ नहीं पढ़ते, हमारी ज़िम्मेदारी है कि हम एक एक से मिल कर नमाज़ छोड़ने के नुक़सानात बता कर जब तक हर एक बालिग़ से नमाज़ पढ़वा न लें चैन न आए, अल्लाह तआला के आगे रो रो कर दुआएं करें बे नमाज़ियों की मिन्नत समाजत करें और जो तदबीर कारगर हो उसे काम में लाकर हर बालिग़ को नमाज़ पर लगा दें, औरतों में औरतों के ज़रीअे काम लें। जिस को वज़ू, ग़ुस्ल करना, नमाज़ पढ़ना न आता हो उसे अपना वक़्त क़ुर्बान कर के सिखाएं। हर नमाज़ी को सूर–ए–फ़ातिहा का मतलब समझाएं नमाज़ पढ़ी जाने वाली तस्बीहात व तक्बीरात का मतलब बताएं ऐसे नमाज़ी जब ख़ुलूस से नमाज़ अदा करें गे तो अव्वलन तो उन में बुरी आदतें होंगी नहीं और अगर हुई और आपने बुरी आदतें छोड़ने का अल्लाह वास्ते मुतालबा किया तो बहुत जल्द बुरी आदतें छोड़ देंगे। फिर जब वह नमाज़ के पाबन्द होंगे, झूठ, चोरी, धोखा फ़रेब से बचें गे, तमाम नशे की चीज़ों से दूर रहें गे, सभी मुआशरती (सामाजिक) बुराइयों से दूर रहें गे तो उन को देखकर गैर मुस्लिम लोग उन का आदर करें गे और वह भी सभी सामाजिक बुराइयों से बचने लगें गे। फिर आप देखंगे कि आप का मुआशरा कितना सुखदाई हो जाए गा।

दुनिया के लोग बुराइयां छोड़ने की दअ़्वत इस लिये देते हैं ताकि मुआशरा सुख मय हो जाए किसी को किसी से तक्लीफ़ न पहुंचे, फिर जो शख़्स ऐसी बुराई में मुबतला हो जाता है जिस से दूसरों को तकलीफ़ पहुंचे जैसे चोरी, डकैती, दूसरे की जायदाद हड़प कर लेना तो कानून उस को सज़ा देता है ताकि वह सज़ा के डर से बुराई न करे लेकिन फिर वह छुप कर बुराई करता है ताकि कानूनी सज़ा से बच जाए परन्तु एक मुसलमान बुराइयां इस लिये छोड़ता है कि बुराई करने पर उसे मरने के पश्चात अल्लाह तआला बहुत ही सख़्त सज़ा देंगे और अल्लाह तआला से छुप कर कोई बुराई कर नहीं सकता, उस की बुराई ज़रूर पकड़ी जाए गी। इस लिये अगर इन्सान अल्लाह पर सहीह मअ़्नों में ईमान ले आए तो समाज की सभी बुराईयां ख़ुद ब ख़ुद ख़त्म हो जाएं।

❑❑

मलेशिया में योग के ख़िलाफ़ फ़तवा

मलेशिया शीर्ष इस्लामिक परिषद ने योग के ख़िलाफ़ फ़तवा जारी करते हुये मुसलमानों से योग से दूर रहने को कहा है। बहुधर्मी देश मलेशिया की नेशनल फ़तवा कांउसिल द्वारा तैयार किये गये इस फ़तवे में कहा गया है कि योग में हिन्दू धर्म की प्रार्थनाओं का महत्त्वपूर्ण स्थान है और यह भगवान के नज़दीक ले जाने का माध्यम समझा जाता है। फ़तवे में इसे बुतपरस्ती बताते हुये इस्लाम विरोधी कहा गया है और इस कारण से मुसलमानों को योग से दूर रहने की हिदायत दी गयी है। परिषद के अध्यक्ष अब्दुल शकूर हुसैन ने कहा कि मन की शांति और शारीरिक व्यायाम के लिये योग के अलावा दौडना. तैराकी और साइक्लिल चलाने और भोजन पर नियंत्रण करने जैसे भी अन्य तरीक़े हैं। उन्होंने कहा कि योग मुस्लिम आस्था के लिये नुक़सानदायक है। हालांकि उन्होने स्पष्ट किया कि इस फ़तवे से ग़ैर मुस्लिमों को डरने की कोई ज़रूरत नहीं है क्योंकि इससे योग पर प्रतिबंध नहीं लगाया गया है। फ़तवे का ताल्लुक़ सिर्फ़ मुसलमानों से है। ग़ौरतलब है कि मलेशिया में *फ़तवे का* कोई महत्व नहीं है फिर भी यहां के समाज में इनका महत्वपूर्ण स्थान होता है।

यदि योगा से धार्मिक अंश निकाल दिया जाए तो इसके अपनों में कोई हरज नहीं। (देव बन्द का फत्वा)

❑❑

कुरआन की शिक्षा

मौलाना मु० मंजूर नोमानी

ईसार

समाहत और सखावत ही की एक आला शक्ल यह है कि आदमी खुद जरूरतमन्द होते हुये अपनी चीज दूसरों पर खर्च करे। और दूसरों की जरूरत को अपनी जरूरत पर मुकद्दम रखे। खुद भूका रहे और दूसरों को खिलाये, खुद तकलीफ उठाये और दूसरों को आराम पहँचाये। कुरआने–मजीद में अन्सारे–मदीना की तारीफ में फर्माया गया है:–

तर्जमः और वे मुकद्दम रखते हैं (प्रधानता देते हैं) खुद अपने ऊपर (जरूरतमन्द मुहाजरीन को), अगरचे खुद उन को तकलीफ और तंगी हो। (हश्र :9)

और एक दूसरी आयत में अल्लाह के नेक और मक्बूल जन्नती बन्दों की तारीफ में इर्शाद फर्माया गया है:–

तर्जमः और अल्लाह के ये बन्दे खाने की चाहत और रग्बत के बावजूद खिला देते हैं वह खाना किसी मिस्कीन या यतीम या किसी बेचारा कैदी को। (अद्हर : 8)

इस वस्फ (सिफत) पर अल्लाह तआला की तरफ से अपने बन्दों की यह तारीफ व प्रशंसा, बेशक दूसरे बन्दों को इस की बड़ी असर दार दावत व तर्गीब है कि वे अपने में यह अच्छी आदत पैदा कर के अल्लाह के मक्बूल बन्दे बनें।

बुख्ल (कंजूसी)

समाहत और सख़ावत की ज़िद (विरूद्धार्थ) यानी इस नेकी के मुकाबले की बुराई का नाम बुख्ल है। इस लिये कुरआने–मजीद ने जिस तरह समाहत व सखावत की तर्गीब व तालीम दी है, उसी तरह बुख्ल को निषेध और उस की बड़ी सख्त मजम्मत (बुराई बयान) फर्मायी है। एक दो आयतें इस सिल्सिले की भी यहीं पढ़ ली जायें।

सूरए–आलि अिम्रान में इर्शाद है:–

तर्जमः और जो लोग बुख्ल करते हैं उस में जो अल्लाह ने उन को अपने फज्ल व करम से दिया है (यानी जो लोग अल्लाह की बख्शी हुयी दौलत व कुव्वत वगैरा दूसरे बन्दों पर खर्च नहीं करते, वे) यह खियाल न करें कि यह (रवैया) उन के लिये कुछ अच्छा और फाइदे वाला है (हरगिज ऐसा नहीं है) बल्कि यह उन के लिये निहायत बुरा है। जो दौलत कंजूसी की वजह से वे बचा–बचा कर रख रहे हैं यकीनन वह (कियामत के दिन) उन के गले का तौक बनेगी। (आलिइम्रान : 180)

यही बात सूरए–तौबा में और जियादा स्पष्ट और प्रभावशाली शब्दों में इस तरह फर्मायी गयी है:–

तर्जमः और जो लोग अपनी दौलत सोना–चाँदी (वगैरा) को जमा करते और जोड़ते रहते हैं और उस को खुदा की राह में खर्च नहीं करते, पस ऐ पैगम्बर! आप उन (धन–पुजारियों) को दोजख के दर्दनाक अजाब की "खुशखबरी" सुना दीजिये। (यह दर्दनाक अजाब उन्हें उस दिन होगा) जिस दिन कि उन की जमा की हुयी दौलत को दोजख की आग में तपाया जायेगा, फिर उस से उन के माथे, उन के पहलू और उन की पीठें दागी जायेंगी। (और उन से कहा जायेगा) यह है (तुम्हारी वह दौलत) जिस को तुम ने अपने लिये जोड़ा और जमा किया था। पस मजा चखो तुम अपनी इस दौलत अन्दोजी का।

(अत्तौबा : 34,35)

बुख्ल व कंजूसी की मजम्मत (बुराई) और बद–अंजामी के बयान में अगर कुरआने–मजीद में सिर्फ यही एक आयत होती, तो काफी थी। इस अख्लाकी और रूहानी लानत (धिक्कार) से इन्सानों को बचाने के लिये इस से जियादा और क्या कहा जा सकता है अल्लाह तआला हमारे दिलों को इन हकीकतों का पूरा यकीन नसीब फर्माये।

इस्तिग़्ना व क़नाअ़त

समाहत व सखावत की तरह इस्तिगना व कनाअत भी इन्सान के आला शरीफाना अख्लाक में से हैं। बल्कि कहना चाहिये कि ये दोनों

नफसे–इन्सानी की एक ही पाकीजा सिफत के दो रूख हैं। इस्तिग्ना व कनाअत का मतलब यह है कि इन्सान को जो कुछ अपने जाइज जरीयों और अपनी मेहनत (परिश्रम) के नतीजे में अल्लाह तआला की तरफ से मिले, वह उस को अपना हक व हिस्सा और अपने लिये काफी समझे और दूसरों की चीजों पर ललचाई हुयी निगाहें न डाले और न मख्लूक में से किसी के सामने जरूरत मंदी व माँगने का हाथ फैलाये। कुरआने मजीद की हिदायत है कि हर इन्सान अल्लाह तआला का बन्दा है, और अल्लाह तआला ही उस का रहीम व करीम रब है, इस लिये इस को चाहिये कि अपनी हाजतों में उस के सिवा किसी के सामने अपना हाथ न फैलाये; अल्लाह के खजाने में सब कुछ है और उस की रहमत बन्दों के लिये काफी है।

इस मज्मून (विषय) की कई आयतें तौहिद के बयान में जिक्र की जा चुकी हैं। एक आयत यहाँ और भी पढ़ लीजिये:–

तर्जमः क्या अल्लाह अपने बन्दे के लिये काफी नहीं? जुमर :36 (फिर वह क्यों किसी दूसरे के सामने हाथ फैलाये।)

अल्लाह तआला ने जो कुछ दूसरों को इस दुनया में दे रखा है उस की हिर्स (लालच) न करने और उस की तरफ लोभ की निगाह से न देखने का सीधे (~~क्पतमबज~~) हुक्म देते हुये एक जगह इर्शाद फर्माया गया है:–

तर्जमः और हरगिंज आँख उठा कर न देखो उन सामानों की तरफ जिन से हम ने, उन में के मुख्तलिफ (विभिन्न) लोगों को फाइदा उठाने वाले बना दिया हैं। (ताहा : 131)

एक दूसरी जगह हिदायत फर्मायी गयी है:–

तर्जमः और मत तमन्ना और हिर्स क़रो, उस चीज की जिस में अल्लाह ने तुम में से बाज को बाज पर बड़ाई और फौकियत दी है।

(अन्निसाअ : 32)

मतलब यही है कि जो चीज अल्लाह ने इस दुन्यां में किसी को दी और तुम्हें नहीं दी तो तुम उस की हिर्स (लोभ) मत करो। बल्कि उस की तरफ आँख उठा कर भी न देखो। बस इसी का नाम कनाअत है।

तवक्कुल

इस्तिग़्ना और क़नाअ़त की जड़–बुन्याद तवक्कुल है। अल्लाह के जिस बन्दे को तवक्कुल यानी अल्लाह तआला की रहमत व रबूबिय्यत पर एतिमाद और भरोसा नसीब हो और उस का दिल इस पर मुतमइन (सन्तुष्ट) हो कि अल्लाह तआला मेरी हर जरूरत के लिये काफी है और वह मेरा रहीम व करीम पर्वुर्दगार और कारसाज है, इस में इस्तिग़्ना व क़नाअ़त की सिफत का बदर्जए–कमाल मौजूद होना बिल्कुल कुदरती बात है। इस के अलावा तवक्कुल अपनी जात से और अपनी जगह पर बहुत ही बढ़िया ईमानी सिफत है। जिस बन्दे को तवक्कुल नसीब हो वह अल्लाह तआला को और उस की कुदरत, उस के सारे खजानों और लश्करों को हर वक्त अपने साथ समझता और देखता है। इस लिये कुरआने–मजीद अपने मान्ने वालों को तवक्कुल की सिफत अपने अन्दर पैदा करने की खास तौर से तलक़ीन व ताकीद करता है।

❑❑

जगनायक..................

संगती समुद्र में डुबो दिये गए, फिर यह बनी इसराईल एक समय बीतने पर अपने नबियों की रहनुमाई (मार्ग दर्शन) से पीछा छुड़ाने लगे यहां तक कि शिर्क (अनेकेश्वरवाद) के कामों में लिप्त हो गए और अपनी चरित्र हीन बुराइयों पर अड़े रहे और धांदली करते रहे, जिसके नतीजे में अल्लाह ने उन्हे दूसरों के जरये मुसीबत में डाला, लेकिन उन्होने अपनी बुरी आदतों और बुरे कामों को नहीं छोड़ा, हद यह है कि नबियों को सताया और कत्ल किया, आखिर में हजरत ईसा अलैहिस्सलाम को भी कत्ल करवाने का पूरा इन्तिजाम कर दिया था, जिसको अल्लाह ने नाकाम बना दिया यह कुछ मिसालें (उदाहरण) है जिनका तफसील के साथ कुरआन मजीद में भी तजकिरह (उल्लेख) आया है वरना (अन्यथा) हजारों कौमें हुईं और उनमें नबी आए और नाफरमानियां और बदअमलियों (दुष्कमों) के आखिरी दर्जे पर पहुँच जाने पर अल्लाह रब्बुल इज्जत की तरफ से उनपर तबाही आई।

❑❑

प्यारे नबी की प्यारी बातें

अमतुल्लाह तसनीम

सखावत से कुशाइश और बुख्ल से तंगी

हजरत अबू हुरैरः (र0) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाह अलैहि व सल्लम फरमाते थे, बुख्ल करने वाले और खर्च करने वाले की मिसाल ऐसी है जैसे दो आदमी हैं। उनके बदन पर लोहे की जिरहें उनकी हँसली की हड्डी तक हैं। खर्च करने वाला जब खर्च करता है तो उसकी जिरह उसके बदन पर ढीली हो जाती है, यहाँ तक कि उसकी उँग्लियों तक पहुँच जाती है, और उसके निशानों क़दम को मिटा देती है। और बुख्ल करने वाला जब किसी चीज के खर्च का इरादा नहीं करता तो जिरह के हल्के अपनी जगह पर लिपट जाते हैं। वह कुशादा करना चाहता है और वह कुशादा नहीं होते।

(बुखारी–मुस्लिम)

सदके की बर्कत

हजरत अबू हुरैरः (र0) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाह अलैहि व सल्लम ने फरमाया, जो अच्छी कमाई से खजूर के बराबर सदका करता है अल्लाह तआला उसको कुबूल ही फरमाता है और उसको अपने सीधे हाथ से लेकर उसको उस शख्स के लिए (जिसने सदका किया) बढ़ाता है। जैसे तुम अपने बछेड़े को बढ़ाते हो यहाँ तक कि वह (सदका) पहाड़ के बराबर हो जाता है।

(बुखारी–मुस्लिम)

सदके की वजह से खास इनायते इलाही

हजरत अबू हुरैरः (र0) से रिवायत है कि नबी (स0) ने फरमाया कि एक आदमी किसी मैदान में जा रहा था कि अब्र से एक आवाज सुनी कि फुलाँ के बाग को सेराब करे। वह बादल चला और एक रेतीली जगह को सेराब किया। एक नाला पानी से लबालब भर गया। मैं पानी के पीछे हो लिया। एक आदमी बाग में खड़ा फावड़े से पानी को उलच रहा है। मैंने उससे कहा अल्लाह के बन्दे, तेरा क्या नाम है? तो उसने वही नाम बताया जिसको मैंने अब्र से सुना था। फिर उसने पूछा कि मेरा नाम तुमने क्यों दर्याफ्त किया? मैंने कहा उस अब्र से जिसका यह पानी है एक आवाज सुनी थी। तुम्हारा नाम लेकर कोई कहता था कि फुलाँ के बाग को सेराब कर। तुम ऐसा कौन सा काम करते हो जिसकी वजह से तुम पर ऐसी इनायत हुई? उसने कहा, तुमने पूछा तो मुझे बताना ही पड़ा। बात यह है कि जमीन की जो पैदावार होती है उसके तीन हिस्से करता हूँ। एक हिस्सा सदका करता हूँ, दूसरा अपने बाल–बच्चों की खूराक के लिए रख छोड़ता हूँ। और तीसरा फिर इसी खेती में लगा देता हूँ।

(मुस्लिम)

जुल्म व हिर्स दुनिया की चीजें हैं

हजरत जाबिर (र0) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाह अलैहि व सल्लम ने फरमाया, जुल्म से डरो। जुल्म कियामत के दिन तारीकियाँ होंगी। और हिर्स व बुख्ल से बचो। बुख्ल व हिर्स ने तुमसे पहलों को हलाक किया। उनको इस बात पर आमादा किया कि वह अपने खून बहायें और हराम को जाइज कर लें।

(मुस्लिम)

एक अन्सारी का ईसार

हजरत अबू हुरैरः (र0) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाह अलैहि व सल्लम की खिदमत में एक आदमी हाजिर हुआ और अर्ज किया, मैं बहुत भूका हूँ। आपने अपनी किसी बीवी के पास कहला भेजा, जो कुछ खाना हो भेज दो। उन्होंने अर्ज किया उसी की कसम जिसने आपको हक के साथ नबी बनाकर भेजा है, मेरे पास सिवा पानी के कुछ नहीं है। फिर आपने दूसरी बीवी के पास कहला भेजा। उन्होंने भी इसी तरह जवाब दिया। यहाँ

तक कि सब ने यही जवाब दिया कि जिसने आपको हक के साथ नबी बनाकर भेजा है उसी की कसम मेरे पास सिवा पानी के कुछ नहीं है। आपने फरमाया, इस रात में कौन मेजबानी कर सकता है। एक अन्सारी ने अर्ज किया या रसूलुल्लाह! मैं। फिर वह उनको अपने घर ले गये। अपनी बीवी से कहा, रसूलुल्लाह सल्लल्लाह अलैहि व सल्लम के मेहमान की खातिर करो।

एक रिवायत में है कि अपनी बीवी से पूछा, कुछ है? वह बोली, नहीं, सिर्फ बच्चों का खाना है। कहा, उनको किसी तरह बहला लो। जब रात को खाना माँगें तो उनको बहलाकर सुला देना। जब हमारे मेहमान आयें तो चिराग़ बुझा देना और उन पर जाहिर करना कि हम भी खा रहे हैं। गर्ज कि उन्होंने इस सूरत से मेहमान को खिलाया। और खुद सारी रात फाके से गुजार दी। जब सुब्ह को रसूलुल्लाह (स0) की खिदमत में हाजिर हुए तो आपने फरमाया, तुमने जो कुछ अपने मेहमान के साथ मुआमला किया है अल्लाह को बहुत पसन्द आया।

(बुखारी–मुस्लिम)

खाने में बर्कत

हजरत अबू हुरैरः (र0) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाह अलैहि व सल्लम ने फरमाया, दो आदमियों का खाना तीन आदमियों को काफी होता है। और तीन का खाना चार को काफी होता है।

(बुखारी–मुस्लिम)

हजरत जाबिर (र0) से मर्वी है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाह अलैहि व सल्लम ने फरमाया, एक का खाना दो को, और दो का खाना चार को और चार का खाना आठ को काफी हो जाता है।

(मुस्लिम)

फाजिल चीज मुस्तहक़ का हक़ है

हजरत अबू सअीद (र0) खुदरी से रिवायत है कि हम रसूलुल्लाह सल्लल्लाह अलैहि व सल्लम के साथ सफर में थे। एक आदमी अपनी सवारी पर आया और दायें–बायें देखने लगा। आपने फरमाया, जिसके पास सवारी जरूरत से जियादः हो वह उस आदमी को दे जिसको हाजत हो। और जिसके पास जादे राह जरूरत से जायद हो वह उसको दे जिसके पास न हो। इस तरह माल की बहुत सी किस्मों का जिक्र फरमाया, तो हम समझे कि हममें से किसी के लिए फाजिल चीज में हक़ नहीं है।

रसूलुल्लाह (स0) ने जरूरत का कपड़ा तक उतार कर दे दिया

हजरत सहल (र0) बिन सइद (र0) से रिवायत है कि एक औरत नबी (स0) की खिदमत में एक चादर लाई और अर्ज किया, या रसूलुल्लाह! इसको अपने हाथ से बुनकर लायी हूँ कि आपको पहनाऊँ। आपने कुबूल कर लिया। आपको जरूरत भी थी। आप उसकी तहबन्द बाँधकर हमारे मजमे में तश्रीफ लाये। एक साहब बोले, कितनी अच्छी है। इसको आप हमें दे दीजिए। आपने फरमाया, अच्छा; फिर उसी मजलिस में बैठ गये। थोड़ी देर के बाद तश्रीफ ले गये और तहबन्द लपेटकर उनको भेज दी। लोगों ने कहा, तुमने बहुत बुरा किया। रसूलुल्लाह (स0) को जरूरत थी, आप पहने हुए थे। तुमने माँग लिया हालाँकि तुम जानते हो कि आप किसी का सवाल रद नहीं करते। उन्होंने कहा, मैंने इस लिए नहीं माँगा कि पहनूँ, बल्कि इसलिए माँगा है कि मेरा कफन इसी का हो। हजरत सहल (र0) कहते हैं कि वह चादर उनके कफन ही के काम आयी।

(बुखारी)

अपना–अपना खाना साथ जमा कर देना

हजरत अबू मूसा (र0) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (स0) ने फरमाया, कबीलः अशअरवालों की आदत है, जब किसी गजवः या मदीना में उनका खाना चुक जाता या खत्म होने के करीब होता है तो जो कुछ सबके पास होता है उसको एक कपड़े पर जमा करते हैं। ख्वाह किसी के पास कम हो या जियादः। फिर उसको मिलाकर आपस में बराबर तकसीम कर लेते हैं। आपने यह कहकर फरमाया कि वह मुझसे हैं और मैं उनसे हूँ। (बुखारी–मुस्लिम)

❑❑

जगनायक

हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम

मौलाना मुहम्मद राबे हसनी

अनुवाद मु० गुफ़रान नदवी

इन अंबियां अलैहिमस्सलाम में पहले शख्स खुद इन्सानों ही के मुरिसे अव्वल (मूल पुरूष) हजरत आदम अलैहिस्सलाम नबी की हैसियत से अपनी औलाद को सीधे रास्ते पर लाने और खुदा की बन्दगी पर कायम (स्थिर) रखने की फिक्र व कोशिश के लिये मुकर्रर (नियुक्त) हुए, इसी लिये उनकी औलाद बराबर अपने मूरिस हजरत आदम अलैहिस्सलाम के बताए हुए रास्ते पर चलती रही लेकिन जब वक्त और नसलों के गुजरने के साथ उनमें बिगाड़ आता गया तो आवश्यकतानुसार उनमें नबी भेजे जाते रहे, अल्लाह ने फरमाया:—

कोई कौम ऐसी नहीं जिनमें डराने वाला न आया हो।

(सुरह फातिर : 24)

अल्लाह तआला ने अपने उन नबियों में से कुछ का तजकिरा कुरआन मजीद में मिसाल के तौर पर किया है और बाकी के बारे में सिर्फ यह बताया है कि हर कौम में नबी आए जिन नबियों का तजकिरा (उल्लेख) अल्लाह तआला ने अपनी किताब में किया उनमें सबसे पहले हजरत नूह अलैहिस्सलाम का तजकिरा (उल्लेख) किया, यह इन्सानों के मुरिस हजरत आदम अलैहिस्सलाम के बअद उनकी नसलों में बहुत वर्षों बअद नबी नियुक्त किये गए, उनकी कौम आहिस्ता आहिस्ता (शनैः शनैः) अपने नेक (सदाचारी) और बड़े लोगों की तअजीम (सम्मान) में उनकी यादगार (स्मारक) बनाकर तअजीम (सम्मान) करते करते इबादत (उपासना) करने लगी थी और अपने पैदा करने वाले और मालिक को जो एक ही है छोड़कर गुजरे हुवे नामवर (महान) लोगों को खुदा का स्थान देकर उनकी इबादत (उपासना) में लग गई थी और इसी के साथ दूसरी ओर गुनाहों (पाप) और अत्याचार के कामों में मुबतला (ग्रस्त) थे। हजरत नूह अलैहिस्सलाम ने साढे नौ सौ साल उनमें रहकर नबूवत का मुसलिहानह व दाइयानह (सुधारात्मक और भलाई की और बुलाने) का फर्ज़ (कर्तब्य) पूरा किया, इतने लंबे समय तक समझाने और सुधार का काम अन्जाम देने के बअद भी गिन्ती के थोड़े लोग एक अल्लाह की बन्दगी और अखलाकी व इन्सानी हालत सुधार पर आसके और जब अकसर व बेशतर (अधिकांश) लोगो के सीधे रास्ते पर आने की उम्मीद खत्म हो गई तो हजरत नूह अलैहिस्सलाम ने उनको सजा दिये जाने की दरख्वास्त (प्रार्थना) की, अतएवं अल्लाह की ओर से उनके लिये तूफान में हलाक (विनाश) कर दिये जाने का फैसला हुआ और सजा दिये जाने से पहले हजरत नूह अलैहिस्सलामको कश्ती (नाव) बनाने का हुक्म हुआ ताकि उस के जरये (द्वारा) हज़रत नूह अलैहिस्सलाम और उनके मानने वाले बचा दिये जाएं क्यों कि कौम के नाफरमानों (अवज्ञा कारियों) को बहुत भंयकर तूफानी सैलाब से सजा दिये जाने का फैसला हुआ :—

"और हमने नूह को उनकी कौम की ओर भेजा, वह उनमें साढ़े नौ सौ साल तक रहे फिर तो उन्हें तूफान ने धर पकड़ा और वह थे जालिम (अत्याचारी), फिर हमने उन्हे और कश्ती (नाव) वालो को नजात दी और इस वाकिए (घटना) को हमने सारे संसार के लिये एक निशानी बना दिया"

(अल—अनकबूत : 14—15)

बअ्द में उन नजात पाने वाले इन्सानों की औलाद इस दुनिया में चली, अल्लाह तआला ने उनका तजकिरह (उल्लेख) अपनी किताब कुरआन मजीद में किया, उनके बअ्द के नबियों में से कुछ दूसरे नबियों की कौमों का हाल भी कुरआन मजीद में बयान किया गया है, जो अरबी इलाके (क्षेत्र) और उसके आस पास की कौमों में जब वह अपने रब (स्वामी) की नाफरमानी और गुनाह (पापों) पर इसरार (आग्रह) करने लगीं मबऊस (औतारित) किये गए, और वह कौमें जब जब अपने नबियों की नाफरमानी (अवज्ञा) में बहुत आगे

बढ़गईं और नबी की बात नहीं मानी तो उन पर अजाब आए उनमें हजरत नूह अलैहिस्सलाम की कौम के बअ्द उन्हीं की बअ्द की नसलों (वंशों) में कौम आद का जिक्र (वर्णन) किया गया है, यह यमन के पूर्वी इलाके में आबाद थी, उनमें भी अपने असली मालिक और पैदा करने वाले को छोड़कर अपनी पसन्द के बुतों और मूर्तियों की पूजा फैल गई और इसी के साथ कमजोरों और गरीबों पर जुल्म जियादती, घमन्ड गुरूर (अभिमान) और बद अमली (दुष्कर्म) की बातें रिवाज पागई थीं, उनमें हजरत हूद अलैहिस्सलाम को नबी मुकरर (नियक्त) किया, उनकी कौम के लोग भी शिर्क (अनेकेश्रवाद) और अपने बिगाड़ पर काएम (स्थिर) रहे और अपने नबी हजरत हूद अलैहिस्सलाम का मजाक उड़ाते रहे, जिस के नतीजे में उनपर अल्लाह का गजब (प्रकोप) नाजिल हुवा।

इस कौम के तजकिरे (वर्णन) के बअद कौमे समूद का तजकिरह (वर्णन) आया है, यह हिजाज के उत्तरी क्षेत्र के पहाड़ी इलाके में आबाद थे, उनमें हजरत सुवालेह अलैहिस्सलाम नबी बनाए गए, यह कौम भी भांति, भांति के खुदा बना के उनकी पूजा करती और कमजोरों पर जुल्म और अश्लील बातों में ग्रस्त थी, उन नबी के साथ भी कौम ने बड़ी जियादती की और किसी तरह भी अपने को सुधारा नहीं, उनके लिये एक ऊँटनी हजरत सुवालेह अलैहिस्सलाम की नबूवत की तसदीक (पुष्टि) के लिये अल्लाह ने पैदा की और उसकी हिफाजत (रक्षा) का हुक्म दिया, लेकिन उन्होंने उसको मार डाला और सरकशी (अवज्ञा) पर काएम (स्थिर) रहे, इस लिये वह लोग भी तबाह (नष्ट) कर दिये गए, सिर्फ नेक (सदाचारी) लोग बचे, और वह और उनकी औलाद नेकी के साथ जिन्दगी गुजारने लगे, लेकिन नस्ल (वंश) बदलने और समय गुजरने के साथ उनमें भी बुराइयाँ और शिर्क (अनेकेश्वरवाद) पैदा होने लगा, उनके सुधार के लिये उन्ही में से नबी आए, कुरआन मजीद में कौम समूद के बअद कौमे लूत और कौम मदयन का जिक्र (वर्णन) आया है, उन सब कौमों ने अपने अपने नबी को परेशान किया और अपना अपना गलत अप्रिय कामों का ढंग नही बदला।

कौम लूत फिलिस्तीन के एक हिस्से (भाग) में आबाद थी, और उनकी बड़ी खराबी शिर्क (अनेकाश्वरवाद) के साथ हम जिन्सी (समलिंग) की लअनत (फिटकार) थी जो उनमें बुरी तरह फैल गई थी, और उसमें भी वह जोर जबरदस्ती बेहयाई (अश्लीलता) दिखाने लगे थे, इसी के साथ दूसरे गुनाहो (पापों) पर अड़े हुवे थे। उनमें हजरत लूत अलैहिस्सलाम जो हजरत इबराहीम अलैहिस्सलामके भतीजे थे, मबऊस (औतारित) किये गए, उन्हों ने बहुत कोशिश की, लेकिन उनकी बात नहीं मानी गई, चुनांचि उनपर सख्त ज्वाला मुखी भूचाल आया वह तबाह व बरबाद कर दिये गए।

कौमे मदयन हिजाज के उत्तरी भाग में आबाद थी, शिर्क के साथ कारोबार में खियानत और बददियानती (कपट और विश्वासघाट) करती थी और दूसरे गुनाहों में मुब्तला (ग्रस्त) थी उनमें हजरत शुऐब अलैहिस्सलाम भेजे गए, उन्हों ने समझाने की बहुत कोशिश की, जब आखिर आखिर तक वह अपने दुष्कर्मों पर जमे रहे तो उनपर अजाब आया।

कुरआन मजीद में कौमे मदयन के बअद मिसरी कौम की हालत का तजकिरा (वर्णन) किया गया, वहाँ उनके बादशाह फिरऔन और उसकी कौम ने बहुत उधम मचाया था, वहाँ बनी इसराईल अल्प संख्यक में थे, उनमें जब कोई बच्चा पैदा होता तो उसको मार दिया जाता और लड़की पैदा होती तो उसको छोड़ दिया जाता ताकि फिरऔन की कौम के घरों में उनसे खिदमत ली जाया करे और मुल्क की कमजोर नस्ल में लोगों के साथ बड़ा जुल्म किया जाता था, फिर इसी के साथ साथ फिरऔन अपने आप को खुदा करार देकर अपनी पूजा कराता था, और साफ साफ कहता था कि मेरे अलावा तुम्हारा कोई खुदा नहीं, बनी इसराईल में नबी हजरत मूसा अलैहिस्सलाम ने उसे बहुत समझाया, और समझाते समझाते जब एक लम्बा समय बीत गया और फिरऔन का जुल्म और अत्याचार नहीं रूका तो अल्लाह का गजब (प्रकोप) आया और फिरऔन और उसके साथी,

शेष पृष्ठ 6

क़िस्त : 13

कारवाने ज़िन्दगी

आत्म कथा

मौलाना सैय्यद अबुल हसन अ़ली हसनी

उर्दू भाषा और साहित्य, और कुछ उच्च स्तरीय पुस्तकों का अध्ययन

यह मेरा सौभाग्य था कि उम्र की शरूआत और अरबी शिक्षा के प्रारम्भ ही के जमाने में मैंने उर्दू भाषा और साहित्य की स्टैंडर्ड किताबें पढ़लीं। दीन के जिन विद्वानों को उम्र के शुरू में अपने मुल्क की भाषा व साहित्य के अध्ययन और उस के प्रति रूचि पैदा करने का अवसर नहीं मिलता या बड़ी उम्र में वह उस का अध्ययन करते हैं उन को दीन की प्रभावी दावत देने और दीनी यथार्थ को समझने समझाने में और आधुनिक विद्वत समाज में दीनी मकसद को दिल में उतारने में कठिनाई होती है। और उन की शैली में वह ताकत ह्रदय ग्राहिक नहीं होती जिसकी इस जमाने में जरूरत है।

रायबरेली के ठहराव में जो कभी कभी लम्बा हो जाता था मेरे हाथ में मौलाना शिब्ली मरहूम की "अलफारूक़" आ गयी। नामी प्रेस कानपूर की छपी हुई, सरापा तस्वीर, पढ़ी और कई बार पढ़ी। चचा मोहतरम सैयद तल्हा साहब की सुहबत और मज्लिसों में "आबे हयात" से परिचय हुआ, सुनी और बार बार पढ़ी यहाँ तक कि इसके बहुत से लेख याद हो गये। वर्णित लोगों, कवियों और उन की रचनाएं दिमाग पर इस तरह नकश हो गईं जिस तरह बचपन की देखी हुई चीजें और सुनी हुई बातें मस्तिष्क पर छाप छोड़ जाती हैं, और उनका दिमाग पर कोई बोझ नहीं होता।

"गुले राना" घर की किताब थी उस को इतनी बार पढ़ा कि उर्दू शायरी का इतिहास और शायरों के बारे में इतने मालूमात हो गये कि इस विषय पर मजलिस में बात चीत करने और वार्तालाप में प्रतिभाग करने की क्षमता पैदा हो गयी।

मेरे मामूजाद भाई हाफिज सैयद हबीबुर्रहमान जामे मिल्लिया में पढ़ते थे। उन को उर्दू शेर व शायरी का बड़ा शौक था। उनकी एक विशेष अभिरूचि यह थी कि बच्चों से शेर की पक्तियों का मतलब पूछते और उर्दू में तकरीर व तहरीर के मुकाबले करवाते इस क्रम में विशेषकर मोमिन गालिब, जौक और लखनऊ के शायरों में से आतिश और अमीर मीनाई की रचनाओं से उनको विशेष लगाव था। अतएवं उनके शेर सुनने और उनका मतलब बयान करने के सिलसिले में दिमाग पर जोर डालने और मुश्किल शेर को समझने की आदत पड़ी। शेर का मतलब समझने में उनके बड़े भाई मोलवी सैयद अबुल खैर साहब बर्क का भी हिस्सा है जो लखनऊ की जबान के आशिक, मुहाविरें शब्दों पुल्लिंग, स्त्रीलिंग के इस्तेमाल में सनद और उस्ताद का दर्जा रखते थे। खुद भी शेर कहते थे और अच्छे कहते थे।

उस जमाने में मुशायरों का बड़ा जोर था। हमारे छोटे गाँव में कई मुशायरे हुए, देखा देखी मैंने भी कुछ मौजूँ करने की कोशिश की, मगर अल्लाह बड़े भाई साहब को जजा--ए–खैर दे कि उन्हों ने बहुत सख्ती से रोक दिया और यह शुग्ले बेहासिल जारी न रह सका।

रायबरेली में बाज अज़ीज़ों का ज़खीर–ए–कुत्ब था जिस में मोलवीमो0 हुसैन आजाद की "नैरँगे खयाल" भी थी, उम्र के इस शुरूआती दौर और जबान व अदब के इस इब्तेदायी जौक़ में आजाद की नस्र (गद्य) का जो नस्रे फन्नी का एक मुरस्सा (जड़ाऊ) नमूना है, बहुत असर पड़ा, बहुत दिनों तक "नैरँगे खयाल" और "आबे हयात" की तकलीद (पैरवी) में बहुत से सफहे सियाह किये, जो अपने कम होने के बावजूद फायदे से खाली नहीं। यह जमाना हर छपी हुई चीज के पढ़ने के मर्ज का था। हर किस्म की चीजें पढ़ीं। मौलाना शिब्ली मरहूम, मौलाना हाली और मोलवी नजीर अहमद, शरर मरहूम और रतन नाथ की भी चन्द किताबें पढ़ीं। मेरे मामूँ मोलवी हाफिज सैयद उबैद उल्लाह साहब के यहाँ मौलाना आजाद के विश्व विख्यात अखबार "अलहेलाल" के कई साल के फाइल थे, वह भी रूचि के साथ पढ़े और उन की लेखनी के जादू का तबीयत ने पूरा असर कबूल

किया। कहते हैं कि कोई पढ़ी हुई चीज चाहे भुला दी जाये बेकार और बेअसर नहीं रहती, अपना अच्छा बुरा असर जरूर करती है इस लिये इस का दावा नहीं किया जा सकता कि वह नकश आँखों से आगे नहीं बढ़ पाया, लेकिन उनका कोई खास असर याद नहीं आता।

उर्दू निबन्ध लेखन में इब्तेदायी असर वालिद मरहूम की किताब "यादे अय्याम" का था जो गम्भीर भावा का एक खिला हुआ नमूना है, और जिस में इतिहास की गरिमा के साथ भाषा का बाँकपन भी मौजूद है जो मेरे इल्म में "गुले राना" के लेखक और मौलाना हबीबुर्रहमान खाँ शिरवानी की तहरीर का मुश्तरक जौहर है। इस तर्ज पर मेरा पहला मजमून जो अब याद आता है "स्पेन" पर था।

उस जमाने की एक घटना भी उल्लेखनीय है कि मैंने शिब्ली बुक डिपो (जो लखनऊ में उस समय लाटूश रोड पर मोलवी कलीम अहमद साहब बहराइची नदवी का तिजारती मकतबः था) की सूची में एक किताब "रहमतुल्लिलआलमीन" लेखक काजी मोहम्मद सुलेमान साहब मँसूरपुरी का नाम पढ़ा, पढ़ते ही तबीयत में ऐसा आकर्षण हुआ कि मैंने उस का आर्डर दे दिया। किताब आई तो उस समय वाल्दः साहिबः के पास वी0पी0 छुड़ाने के लिये पैसे न थे। उन्होंने मजबूरी का इजहार किया। मैंने इस पर रोना शुरू कर दिया। बाल्दः साहिबः ने मजबूर होकर कहीं से इस का इन्तेजाम किया और वी0पी0 छुड़ा ली। मैंने इस किताब को बड़े जौक व शौक और अकीदत (आस्था) व तनमयता के साथ पढ़ा। कम किताबों ने मन–मस्तिष्क पर ऐसा गहरा असर डाला होगा जितना इस किताब ने। लेखक की निष्ठा (इखलास) और उनकी कूवते ईमानी और दाइयाना (आह्वान) रँग था। और सीरत की घटनाओं की सादगी और प्रभाव शीलता (असर अंगेजी) कि दिल व दिमाग में एक करेन्ट सा दौड़ गया। इस किताब को अपनी मुहसिन व मुरब्बी (दीक्षा देने वाली) किताबों में समझता हूँ। और इसके लेखक के दर्जे ऊँचे होने और कबूलियत की दुआ करता हूँ।

बाजार झाऊलाल का दोबारा ठहराव

1925 ई0 था कि भाई साहब ने मेडिकल कालेज के आखिरी साल का इम्तेहान दिया, और कामयाब हुए, नवम्बर 1925 में उन्हें एम.बी. बी.एस. की डिग्री मिल गयी। अब वह बाकायदा मतब (क्लैनिक) करने को तैयार हो गये थे। जनवरी 1926 से गोईन रोड, लखनऊ पर (वालिद के पुराने मतब के पास) मतब की शुरूआत कर दिया और करीब ही बाजार झाऊलाल की उसी गली में जिस के सिरे पर हमारा सड़क के किनारे पुराना मकान था, एक छोटा सा मकान किराये पर लिया। यह अरब साहब के उस मकान से लगा हुआ बिल्कुल सामने ही था, जिस में उनका खानगी मदरसा था, और हम सब पढ़ते थे, इस लिये तालीम में और भी आसनी हुई। (जारी)

❑❑

भूकम्प या कियामत .....

हालात पुकार पुकार कर कह रहे हैं कि कियामत का फरिशता अब हमारा दरवाजा खट खटा रहा है काउन्ट डाउन अपनी अन्तिम गिनती पर है। अब आवाज आ रही है कि जागने वालो जागो, देखने वालो देखो, कान वालो सुनो, दिमाग वालो सोचो अब अन्तिम समय है और पहले ही यह बता दिया गया है कि यह संसार सदैव के लिए नहीं है वह समय आएगा जब यह संसार समाप्त हो जाएगा। फिर एक नया संसार होगा जिसमें सभी पापियों के लिए नर्क और ईश्वर के वफादारों के लिए सदैव रहने के लिए स्वर्ग होगा।

क्या हम कियामत का इन्तिजार कर रहे हैं कि वह अचानक आ पड़े और हमे उस की खबर तक नहीं अभी हम स्वतन्त्र हैं किन्तु हमें बहरहाल सच्चाई को स्वीकार करना ही होगा यदि अभी नहीं तो कल अल्लाह के सामने किन्तु वह स्वीकृति किसी काम न आएगी क्यों कि वह समय फैसला का होगा, नर्क या स्वर्ग का फैसला। दोस्तो! समय अन्तिम चरण में है हमें अल्लाह के खिलाफ सरकशी का तरीका छोड़ देना चाहिए और परमेश्वर (अल्लाह) के साथ वफादारी और उस की गुलामी का नाता जोड़ लेना चाहिए अब समय की यही पुकार है कि आदमी अपने आप को सुधार ले अपने आप केवल एक ईश्वर की गुलामी में दे दे और अन्तिम सन्देशटा मोहमद स0 अ0 के बताए हुए रास्ते पर चल पड़े। क्यों कि जीवन की सफलता का यही एक मात्र रास्ता है।

❑❑

दूसरी किस्त

पड़ोसी के हुक़ूक़ (अधिकार)

अल्लामा सैयद सुलैमान नदवी रह०

अनुवादः नजमुस्साकिब अब्बासी माजीपुरी

पड़ोसियों की ओर उपहारों के भेजने का अधिक अवसर औरतों को पेश आता है, इस लिये आप (सल्ल0) ने विशेषता के साथ औरतों को सम्बोधित करके फरमाया कि "ऐ मुसलमानों की पत्नियो! तुम में से कोई पड़ोसन अपनी पड़ोसन के लिये तुच्छ (हकीर) न समझे चाहे बकरी की खुरी ही क्यों न हो"

(बुखारी)

यह नसीहत दोनों औरतों के लिये है अथार्त न तो भेजने वाली बीवी अपने मामूली तोहफे को तुच्छ समझ कर अपनी पड़ोसन को न भेजे और न दूसरी बीवी उस साधरण उपहार को देख क़र उसकी उपेक्षा करे।

एक मुसलमान की दया व सज्जनता का प्रतिबिम्ब ये नहीं कि स्वंय आराम से रहे और अपने पड़ोसन के दुखः व तकलीफ की चिन्ता न करे। हजरत मुहम्मद (सल्ल0) ने फरमाया "मोमिन (आस्तिक) वह नहीं जो स्वंय सेर हो और उसका पड़ोसी उसके पहलू में भूका रहे"

(मिश्कात)

बुराई, बुराई है जहाँ भी हो और पाप, पाप है जहाँ भी करे, लेकिन अगर वह उस जगह हो जहाँ आवश्यक तौर से नेकी होनी चाहिये थी तो जाहिर है कि उस गुनाह और बुराई की श्रेणी साधारण पापों और बुराइयों से बहुत अधिक है।

बदकिस्मत आदमी हर जगह चोरी कर सकता है मगर जाहिर है कि पड़ोस के घर में चोरी करना कितना बुरा है। दुष्कर्म (बदकारी) हर जगह उससे संभव है मगर पड़ोस के घर में जहाँ दिन–रात आना–जाना है और जहाँ के मर्द पड़ोस के शरीक मर्दो पर भरोसा करके बाहर जाते हैं। नैतिक छल–कपट किस कदर शर्मनाक है, इसी लिये तौरेत में ये आदेश था! "तू अपने पड़ोसी पर झूठी गवाही मत दे, तू अपने पड़ोसी के घर का लालच मत कर, तू अपने पड़ोसी की जोरू और उसके गुलाम और उसकी लौंड़ी (दासी) और उसके बैल और उसके गधे और किसी चीज का जो तेरे पड़ोसी का हक़ है लालच न कर" (खुरूज) "तू अपने पड़ोसी से विश्वासघात न कर, न उससे कुछ छीन ले"

(अहबार)

इस्लाम ने अपने संदेष्टा (पैगम्बर) हजरत मुहम्मद (सल्ल0) की जबान से उस अगली शिक्षा की तकमील इन शब्दों में फरमाई जिनमें तौरेत की तरह केवल रोकने पर बस नहीं किया है बल्कि उसको दस गुना ज्यादा करके दिखाया। एक प्रश्न के उत्तर में फरमाय "व्यभिचार (जिना) हराम है, अल्लाह और रसूल (संदेष्टा) ने उसे अवैध ठहराया है, लेकिन दस दुष्कर्मों से बढ़कर दुष्कर्म ये है कि अपने पड़ोसी की पत्नी से दुष्कर्म करे, चोरी हराम है अल्लाह और रसूल ने उसे अवैध ठहराया है लेकिन घरो में चोरी करने से बढ़कर बुरा ये है कि अपने पड़ोसी के घर से कुछ चुरा ले"

(अदबुलमुफरद)

दो सहाबिया रजि0 थीं, जिनमें एक रात भर नमाजें पढ़ा करतीं। दिन को उपवास (रोजे) रखतीं। दान–खैरात बहुत करतीं मगर चर्ब जबान थीं, जबान से पड़ोसियों को सताती थीं लोगों ने उनका हाल हजरत मुहम्मद (सल्ल0) से बताया तो फरमाया "उनमें कोई पुण्य (नेकी) नहीं, उनको नर्क की सजा मिलेगी, फिर सहाबा रजि0 ने दूसरी महिला का हाल सुनाया जो केवल फर्ज नमाजें पढ़ लेती और मामूली दान देती, मगर किसी को सताती न थी, फरमाया, "ये महिला जन्नती होगी"।

(अदबुलमुफरद)

हजरत मसीह अ0 ने फरमाया था : "तू अपने पड़ोसी को ऐसा प्यार कर जैसा कि स्वयं को"। (मरकस) हजरत मुहम्मद (सल्ल0)

ने अपनी समस्त शिक्षा व उपदेश में न केवल ये कि पड़ोसी को स्वयं अपने जैसा प्यार करने पर जोर दिया बल्कि जो न करे उसकी सबसे दौलत अर्थात ईमान छिन जाने का खतरा जाहिर किया। इर्शाद है : "तुम में कोई मोमिन न होगा जब तक अपने पड़ोसी की जान के लिये वही प्रिय न रखे जो स्वयं अपनी जान के लिये प्रिय रखता है"। (मुस्लिम) इससे बढ़ कर ये कि अपनी जान की मुहब्बत नहीं, बल्कि खुदा और रसूल (सल्ल0) की मुहब्बत का उसको पैमाना करार दिया, फरमायाः "जिसको ये पसन्द न हो कि अल्लाह और उसका रसूल (संदेष्टा) उसको प्यार करे या जिसे अल्लाह और उसके रसूल की मुहब्बत का दावा हो तो उसको चाहिये कि वह अपने पड़ोसी का हक अदा करे"।

(मिश्कात)

इस लिये फरमाया कि कयामत (प्रलय) के दिन अल्लाह के दरबार में सबसे पहले वह दो वादी और प्रतिवादी पेश होंगे जो पड़ोसी होंगे (अहमद बिन हम्बल)। इन्सान की खुशमिजाजी और बदमिजाजी का सबसे बड़ा पैमाना ये है कि उसको वह अच्छा कहे जो उससे अधिक निकट हो, अतः एक दिन सहाबा रजि0 ने पूछा कि या रसूलल्लाह! हमे कैसे मालूम हो कि हम अच्छा कर रहे है या बुरा? फरमाया "जब अपने पड़ोसी को तुम अपने सम्बन्ध में अच्छा कहते सुनो तो समझो कि अच्छा कर रहे हो, और जब बुरा कहते सुनो तो समझ लो कि बुरा कर रहे हो"।

(इब्नेमाजा)

कोई पड़ोसी अगर बुराई करे तो घर छोड़ कर दूसरा बेहतर पड़ोस तलाश करो मगर उसकी बुराई के बदले में तुम उसके साथ बुराई न करो। ये एहसान स्वयं उसको शर्मिन्दा करेगा। अतः एक बार एक सहाबी रजि0 ने आकर शिकायत की कि या रसूलल्लाह! मेरा पड़ोसी मुझे सताता है, फरमाया, जाओ सब्र करो, उसके बाद फिर शिकायत लेकर आए, फिर यही नसीहत की, फिर आए और यही प्रार्थना की, फरमाया जाकर तुम अपने घर का सामान रास्ते में डाल दो (घर से स्थानांतरित होने की भूमिका बनाओ) उन सहाबी रजि0 ने यही किया आने–जाने वालों ने पूछा, बात क्या है? उन्होने सच्चाई बताई, सबने उनके पड़ोसी को बुरा–भला कहा। ये देखकर वह ऐसा शर्मिन्दा हुवा कि वह उनको मना कर फिर घर में वापस लाया और वादा किया कि वह फिर न सताएगा।

(अदबुल्मुफरद बुखारी)

हजरत मुहम्मद (सल्ल0) की शिक्षा का ये प्रभाव था कि हर सहाबी रजि0 अपने पड़ोसी का भाई और सेवक बन गया था। एक बार हजरत उमर रजि0 ने देखा कि हजरत जाबिर रजि0 गोश्त का बडा लोथड़ा लटकाए जा रहे है, पूछा क्या है? कहा कि अमीरूल्मुमेनीन! गोश्त खाने को जी चाहता था तो एक दिरहम का गोश्त खरीदा है, फरमाया! ऐ जाबिर *रजि0! क्या* अपने पड़ोसी या करीबी को छोड़ कर केवल अपने पेट की चिन्ता? क्या चाहते हो, क्या ये आयत याद न रही? (मुअत्ता इमाम मालिक)। अनुवाद! जिस दिन काफिर (नास्तिक) दोजख पर पेश होंगे, (उनसे कहा जाएगा) तुम अपने मजे दुनिया की जिन्दगी में ले चुके और फायदा उठा चुके।

(सुरहः अहकाफ)

ध्यान दो कि गोश्त का वह लोथड़ा भी जिसमें अपने पड़ोसी और निकट संम्बन्धी का हिस्सा न हो वह दुनिया का अप्रिय स्वाद बन जाता है, जिसके पकड़े जाने का उनको डर लगता है।

पड़ोसियों में दोस्त व दुश्मन और मुस्लिम व गैरमुस्लिम के बीच फर्क करना कठिन हो गया था। हजतर अब्दुलल्लाह बिन अम्र रजि0 ने एक बार एक बकरी जिबह की। उनके पड़ोस में एक यहूदी भी रहता था। उन्होनें घर के लोगो से पूछा कि क्या तुमने मेरे यहूदी पड़ोसी को भी भेजा? क्यों कि मैने हजरत मुहम्मद (सल्ल0) को कहते सुना है कि मुझे जिबरईल अ0 पड़ोसी के साथ नेकी करने की ताकीद करते रहे मैं समझा कि वह उसको पड़ोसी के (मृतक संपत्ति) तर्का का हकदार बना देगें।

(अबूदाऊद)

❑❑

जरूरियाते दीन कैसे पढ़ाएं

डा० हारून रशीद

तमहीद : दीनी तअ़्लीम के दो हिस्से हैं एक तो वह सारा दीन जिसे अल्लाह के रसूल हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने नुबुव्वत के एअ़लान के बअ़द आख़िर उम्र तक अपने सहाबा को क़ुर्आन मजीद के ज़रीअ़े और अपने क़ौल व अ़मल के ज़रीअ़े सिखाया यह इल्म उलमा हज़रात सीखते हैं इस का सीखना, इसे महफ़ूज़ रखना और दूसरों को सिखाते रहना बहुत ज़रूरी है मगर यह पूरा इल्म हर ईमान लाने वाले के लिये ज़रूरी नहीं है।

दूसरा हिस्सा ज़रूरियाते दीन का है जो अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की तअ़्लीमात ही से लिया गया है जिस का जानना और उस पर अ़मल करना हर मुसलमान के लिये ज़रूरी है।

ज़रूरियाते दीन का मुनासिब निसाब हर दीनी मकतब में राइज है, बअ़्ज़ प्राइमरी दुन्यावी मदरसे जो मुसलमानों के इन्तिज़ाम में चलते हैं या इंग्लिश मीडियम स्कूल जो मुसलमानों के इन्तिज़ाम में चलते हैं उन में भी ज़रूरियाते दीन के निसाब से ज़ियादा ज़रूरी छांट कर पढ़ाया जा रहा है। इस में क़ुर्आन शरीफ़ नाज़िरा (देख कर पढ़ना) सब के लिये लाज़िमी (अनिवार्य) है। इस लिये हम सब से पहले इसी पर बात करेंगे।

क़ुर्आने मजीद की ज़बान अ़रबी है, अ़रबी ज़बान पढ़े बिना हमारे मुल्क में कोई शख़्स इसे समझ नहीं सकता। इस लिये बअ़्ज़ हिन्दी या अंग्रेज़ी के अअ़ला तअ़्लीम याफ़्ता लोगों को इस पर इश्काल होता है कि जो ज़बान समझी न जाए उसके पांच छे सौ सफ़हात (पृष्ठ) कैसे पढ़े जा सकते हैं और बअ़्ज़ को तो यह कहते भी सुना गया के बे समझे किसी किताब के पढ़ने का क्या फ़ाइदा? अस्तग़्फ़िरुल्लाह! यह जुमले दीन से ना वाक़िफ़ीयत की बिना पर अदा होते है तौबा लाज़िम है। उन को जानना चाहिये कि क़ुर्आन शरीफ़ बे समझे पढ़ने में भी अल्लाह तआ़ला की तरफ़ से इनआ़म मिलेगा तो जिस काम पर अल्लाह इनआ़म दे उस को बे फ़ाइदा समझना ख़ुद गुनाह है। फिर नमाज़ फ़र्ज़ है, नमाज़ छोड़ने वाला बअ़्ज़ उलमा के नज़दीक इस्लाम से ख़ारिज है, बअ़्ज़ के नज़दीक काबिले क़त्ल है, और फ़ासिक़ से कम तो कोई कहता ही नहीं है, और नमाज़ बिना क़ुर्आन मजीद पढ़े बल्कि बअ़्ज़ सूरतें और आयतें जबानी पढ़े बिना हो ही नहीं सकती इस के बअ़्द किस के मुंह में ज़बान है कि बे समझे क़ुर्आन मजीद पढ़ने को बे फ़ाइदा कह सके।

रही बात बे समझे पढ़ सकने की तो यह क़ुर्आन मजीद का एअ़जाज़ है। क्या आप अख़बारों में नहीं पढ़ते रहते है कि फ़ुलाँ की बच्ची या बच्चे ने पांच साल की उम्र में नाज़िरा ख़त्म कर लिया यानी 600 सफ़हात की किताब देख कर पढ़ डाली और अब बिला किसी की मदद के सहीह पढ़ सकता है। इसी तरह ख़बरें छपती हैं। कि 9 साल या दस साल की उ़म्र में क़ुर्आन मजीद ज़बानी याद कर लिया, मेरे घर का ख़ुद वाक़िआ़ है कि मेरी बच्ची जो अभी हयात है साढ़े चार साल की उ़म्र में नाज़िरा ख़त्म किया था और मेरे लड़के मर्ग़ूब ने नौ साल की उ़म्र में हाफ़िज़ा मुकम्मल किया था और उसे पक्का याद था किसी ज़बान में हैं ऐसी मिसालें? हरगिज नहीं। फिर उस के पढ़ने पढ़ाने में क्या इशकाल? यह तमहीदी बात क़ुर्आन शरीफ़ की तअ़्लीम के सिल्सिले में ज़रूरी थी अब आते है अस्ल मौज़ूअ़ (विषय) की जानिब।

क़ुर्आन शरीफ़ आप कैसे पढ़ाएं?

आ़म तौर से मदरसों में क़ुर्आन मजीद नाज़िरा चार मरहलों में मुकम्मल कराया जाता है इस लिये कि वहां रोज़ाना एक तअ़्लीमी घन्टा इस काम के लिये मिलता है जब कि घरों में जहाँपूरा वक़्त इसी काम के लिये वक़्फ़ होता है ज़हीन बच्चे बच्चियां साल दो साल ही में क़ुर्आन नाज़िरा पूरा कर लेते हैं। मदरसों में अतफ़ाल का दर्जा (INFANT CLASS) बहुत छोटे बच्चों का होता है उनको सिर्फ़ हुरूफ़ पहचनवाए जाते हैं। जब कि दर्जा अव्वल में अ़रबी पढ़ने का क़ाइदा पढ़ाय जाता है लेकिन

अतफ़ाल में कुल दो सूरतें सुर–ए–फ़ातिह: और सूर–ए–इख़्लास तअ़व्वुज़ व तस्मियः के साथ ज़बानी याद कराया जाता है जब कि दर्जा अव्वल में कोई अ़रबी का क़ाइदा पढ़ाया जाता है साथ में सूर–ए–फ़ील से सुरतुन्नास तक मअ़े सूर–ए–फ़ातिहा के ज़बानी · याद कराया जाता है।

हुरूफ़ शिनासी के लिये आज कल प्लास्टिक कार्ड पर हुरूफ़ छापे गये हैं, जो बच्चों को पढ़ाने के लिये बेहतर हैं लेकिन यह हुरूफ़ खूब जली (Bold) और ख़ुश रंग होने चाहियें कार्ड भी ज़रा दबीज़ और अच्छे क़िस्म का मज़बूत होना चाहिये।

हुरूफ़ शिनासी के लिये हर बच्चे के पास एक एक हर्फ़ के कार्ड भी होने चाहियें यह दफ़्ती के 6X4 सेन्टी मीटर के साइज़ के मुनासिब रहेंगे इन पर छपे हुए जली हुरूफ़ चिपके हों।

क़ाइदा पढ़ाने का तरीका

ज़रूरी सामान :– ब्लैक बोर्ड, चाक, फलों की तस्वीरों का चार्ट, बच्चों के पास हुरूफ़ के अलग अलग कार्ड, एक जगह लिखे हुए हुरूफ़ का कार्ड।

उस्ताद बच्चों पर नज़र डाले कोई बच्चा सुस्त नज़र आ रहा हो तो उस से बातें करें यहाँ तक कि उस को हंसा दे।

तस्वीरों का चार्ट बोर्ड पर लटका कर बच्चो से पूछे यह क्या है? बच्चे एक साथ जवाब दें जैसे कहें आम। इसी तरह मुख़तलिफ़ तस्वीरों के नाम पूछ कर इजतिमाई (सामोहिक) जवाब ले, फिर कुछ बच्चों से ख़ास तौर से सुस्त बच्चो से जवाब ले, बच्चा ग़लती करे तो डाटने के बजाए हंसाने की कोशिश करें।

अब बोर्ड पर से तस्वीरों का चार्ट हटा कर बड़ा सा अलिफ़ लिख कर कहें देखो बच्चो यह अलिफ़ है। फिर पूछें यह क्या है? सब बच्चे कहें अलिफ़, सुस्त बच्चा न कह रहा हो तो उससे अलग से अलिफ़ कहलवाएं। फिर बच्चों से मुतालबा करें कि वह दफ़्ती के कार्डो से अलिफ़ निकालें जो बच्चा न निकाल सके उस की मदद की जाए फिर कार्ड दूसरे कार्डो में मिला कर दोबारा तिबारा नकलवाएं फिर यकजाई लिखे हुए कार्ड में बच्चों से अलिफ़ पर उंगली रखवाएं। इसी तरह बा, ता, सा, पढ़ाएं। फिर चारों हुरूफ़ बार बार कहलाएं। दूसरे दिन पहले हर बच्चे से मुतालबा करें कि कल जो कार्ड पढ़े थे वह कार्ड निकालो, जो बच्चा ग़लती करे उस की मदद की जाए फिर हर बच्चे से अलग अलग चारों हुरूफ़ का सबक सुनें, जो बच्चा न सुना सके उस की मदद करें यहां तक कि वह चारों हुरूफ़ पहचान कर सबक सुना दे। जब पूरी तरह यकीन हो जाए कि सभी बच्चे हुरूफ़ पहचान गये हैं तो अगला सबक पिछले ही सबक की तरह बोर्ड पर पढ़ाया जाए।

तस्वीरों के चार्ट कई होने चाहियें और बदल बदल कर इस्तेअ़माल किये जाएं तस्वीरों के कार्ड बच्चों के ज़ेहन खोलने के लिये हैं।

जिस दिन का सबक़ बच्चों को याद न हो फिर से वह सबक़ दोहराया जाए यहां तक कि सभी बच्चों को सबक़ याद हो जाए।

अस्बाक़ की तक़्सीम उस्ताद अपनी सवाबे दीद से करें।

इस तरह बच्चे जब सारे हुरूफ़ पहचान लें और सहीह मख़ारिज के साथ अदा करने लगें तो अब बच्चों को ज़बर, ज़ेर, पेश हरकात की पहचान कराई जाए ज़बर का अ़मल तो बच्चे बहुत आसानी से समझ लेंगे इस लिये कि बहुत से हुरूफ़ का नाम ही आप ने ज़बर के तलफ़्फ़ुज से बताया है जैसे ब, त, स, ह, आदि फिर भी आप बोर्ड पर लिख कर बच्चों से पढ़वाएं और मिले जुले कार्डो से मतलूबा आवाज़ का कार्ड निकलवाएं और बोर्ड पर निकलवाएं और बोर्ड पर एक लकीर के ऊपर ज़बर की शक्ल बनाकर समझाएं कि ज़बर हमेशा हर्फ़ के ऊपर ही होता है। जब ज़बर के साथ बच्चे सारे हुरूफ़ पहचान लें और आवाज़ें निकाल लें तो बोर्ड पर लकीर के नीचे ज़ेर की शक्ल बना कर बच्चों को पहचान बताएं फिर हर्फ़ों पर ज़ेर का अ़मल बताएं और समझाएं कि ज़ेर हमेशा हर्फ़ के नीचे होती है।

बच्चों को सबक़ बोर्ड पर इजतिमाई तौर पर पढ़ा कर बोर्ड ही पर बच्चों से अलग अलग ज़ेर की हरकत की आवाज़ निकलवाएं और मिले जुले कार्ड निकालें फिर उस्ताद छपे कार्ड का सबक़ इनफ़िरादी हैसीयत से भी सुने। (जारी)

❑❑

? आपके प्रश्नों के उत्तर ?

- इदारा

प्रश्न : नमाज़ में कुछ लोग सीने पर हाथ बांधते हैं तो कुछ लोग नाफ़ (ढोंढ़ी) के नीचे, ठीक क्या है?

उत्तर : बायां हाथ नीचे रहे और दायां ऊपर इस में कोई इख़्तिलाफ़ (मत भेद) नहीं है। हनफ़ी ह़ज़रात के यहां मर्द नाफ़ के नीचे हाथ बांधते हैं और औरतें सीने पर, दूसरे लोग शाफ़ई अहले ह़दीस वग़ैरह मर्द, औरत सब सीने पर बांधते हैं जब कि मालिकी ह़ज़रात इरसाल करते हैं यअ़नी हाथ नहीं बांधते दोनों जानिब लटके हुए छोड़ देते हैं। इस सिल्सिले की ह़दीसें पढ़ लें।

ह़ज़रत ह़लब ताई (रज़ि0) से रिवायत हे कि मैं ने नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम को दाएं हाथ को बाएं हाथ के जोड़ (क्लाइ) के ऊपर सीने पर हाथ रखते हुए देखा।

(अह़मद, तिर्मिज़ी)

इमाम तिर्मिज़ी ने इस ह़दीस को ह़सन करार दिया है।

ह़ज़रत अबू जुहैफ़ा से रिवायत है कि ह़ज़रत अ़ली रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने फ़रमाया "सुन्नत यह है कि हाथ को हाथ पर नाफ़ के नीचे रखा जाए। (अबूदाऊद, अह़मद, इब्नि अ़ली शैबा, दार क़ुतनी, बैहक़ी)

जरीरुज़्ज़बी (रज़ियल्लाहु अ़न्हु) से रिवायत है कि मैं ने ह़ज़रत अ़ली रज़ियल्लाहु अ़न्हु को (नमाज़ में) नाफ़ से ऊपर हाथ बान्धे देखा। (अबूदाऊद)

इन अह़ादीस से मअ़लूम हुआ कि हाथ सीने पर बान्धे या नाफ़ के ऊपर या नीचे बांधे सब से सुन्नत अदा हो जाए गी।

प्रश्न : औ़रतों का मस्जिद की जमाअ़त में शरीक हो कर नमाज़ अदा करना कैसा है?

उत्तर : ह़रमैन (मक्का व मदीना) की मसजिदों में तो आ़म तौर से औ़रतें जमाअ़त से नमाज़ अदा करती हैं।

दूसरी मस्जिदों में अगर वह जमाअ़त में शरीक होना चाहें और किसी ख़राबी का अन्देशा (भय) न हो तो उन को इजाज़त मिलना चाहिये, सुनने अबूदाऊद में है कि : "अल्लाह की बन्दियों को अल्लाह की मस्जिदों से न रोको अगर्चि उन के घर उन के लिये बेहतर हैं।

ह़ज़रत उम्मे सल्मा (रज़ि0) से रिवायत है कि नबी (सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम) ने फ़रमाया "औ़रतों की सब से बेहतर मस्जिद उन के घर के अन्दर की कोठरी है। (मुसनद इमाम अह़मद) लिहाज़ा ह़नफ़ीयों के नज़दीक इस ज़माने में औ़रतों का चाहे वह जवान हो या बूढ़ी मस्जिद में आकर जमाअ़त में शरीक होना फ़साद के अन्देशे से मकरूह है, इसी पर फ़त्वा है। (आ़लम गीरी, तन्वीरूल अबसार)

प्रश्न : एक आलिम का एक पैर सिनाई (बनाया हुआ है) जिस से चल फिर लेते हैं और नमाज़ पढ़ने में रुक्अ सजदे में कोई दुशवारी नहीं होती, वुज़ू करने में वह एक पैर धोते हैं, मसनूई (बनावटी) पैर पर कुछ नहीं करते वह एक मस्जिद में इमामत करते हैं। कुछ लोगों का कहना है कि चूंकि उन के एक पैर नहीं है इस लिये उन की इमामत सह़ीह़ नहीं है शरअ़ी हुक्म से आगाह कीजिये।

उत्तर : जब उन के एक पैर है तो वह वुज़ू ग़ुस्ल में एक ही पैर धोएंगे और उन की तहारत कामिल समझी जाए गी। मसनूई (बनावटी) पैर न धोया जाए गा न मसह़ की ज़रूरत है और चूंकि नमाज़ की अदाएगी में कोई कमी नहीं रहती और वह आ़लिम भी हैं लिहाज़ा उन को इमाम बनाया जा सकता है नमाज़ बिला कराहत सह़ीह़ रहे गी।

प्रश्न : क्या बालिग़ मर्द और बालिग़ औ़रत दोनों क़ाज़ी के बिग़ैर अपना निकाह़ ख़ुद पढ़ा सकते हैं?

उत्तर : हाँ अह़नाफ़ के नजदीक अगर औ़रत, मर्द की ना मह़रम है, न वह किसी की बीवी है, न इ़द्दत में है और दोनों आ़क़िल, बालिग़ मुसलमान हैं तो क़ाज़ी के बिना अपना निकाह़ पढ़ा सकते हैं। लेकिन कम से कम दो आ़क़िल, बालिग़ मुस्लिम गवाहों के सामने ईजाब व क़बूल करें यअ़नी औ़रत कहे मैंने इतने

महर पर अपने को आप के निकाह में दिया, और मर्द कहे मैंने क़बूल किया बस निकाह हो गया। अगर मर्द औरत से कहे मैंने इतने महर पर तुझे अपने निकाह में लिया औरत कहे मैंने कबूल किया तब भी निकाह हो गया इस ईजाब व क़बूल यअ्नी निकाह में दिया और निकाह में लिया को दोनों गवाहों का सुनना ज़रूरी है।

अगर दो मर्द गवाह न हों एक मर्द और दो औरतें आक़िला, बालिग़ा मुस्लिमा हों तब भी निकाह हो जाए गा। लेकिन ऐसा किसी मजबूरी के सबब किया जा सकता है वरना बेहतर है कि किसी नमाज़ के बअ्द नमाज़ियों की मौजूदगी में, या मुसलमानों की किसी मजालिस में बालिग़ लड़की के वली की इजाज़त से लड़की का वकील या वकील का वकील निकाह का ख़ुत्बा पढ़े फिर ईजाब के कलेमात कहे यअ्नी यह कि फ़ुलाँ बिन्त फ़ुलाँ को मैंने इतने महर पर तुम्हारे निकाह में दिया, मर्द कहे मैंने क़ुबूल किया। फिर दुआ की जाए और निकाह नामा लिख कर जानिबैन को दे दिया जाए ताकि निकाह का सुबूत रहे और ज़रूरत के वक़्त काम आए।

लंतीफ़ा

कहते हैं एक आक़िल बालिग़ मुस्लिम औरत अपने दरवाज़े पर बैठी हुई थी, एक आक़िल बालिग़ मुस्लिम मर्द उधर से गुज़रा उस ने कहा मैं ने तुम को अपने निकाह में लिया औरत ने कहा मैंने क़बूल किया वह मर्द वहीं बैठ गया। उस के बअ्द दूसरा आक़िल, बालिग़ मुस्लिम आ पहुंचा, उसने औरत को मुख़ातब कर के कहा मैंने तुम्हें अपने निकाह में लिया औरत ने कहा मैंने क़बूल किया और वहीं बैठ गया, पहला आदमी हैरत में था कि इतने में तीसरा आक़िल, बालिग़ मुसलमान आ पहुंचा उसने औरत को मुख़ातब कर के कहा मैंने तुझे अपने निकाह में लिया, उस ने क़बूल कर लिया, अब तीनों बाहम झगड़ने लगे मुआमला क़ाज़ी के यहां पहुंचा, क़ाज़ी ने तफ़्सील मअ्लूम कर के फ़ैसला दिया कि पहले शख़्स के ईजाब व क़बूल में कोई गवाह न था इस लिये निकाह न हुआ, दूसरे शख़्स के ईजाब व क़बूल में सिर्फ़ एक गवाह था, इस लिये निकाह न हुआ, तीसरे शख़्स के ईजाब व क़बूल में दो गवाह मौजूद थे इस लिये यह निकाह मुनअ़क़िद हो गया पहले दोनों शख़्सों का दअ्वा बातिल है। अल्बत्ता तीसरे शख़्स को महरे मिस्ल अदा करना ज़रूरी होगा। तीनों मर्द और औरत नीज़ क़ाज़ी साहब सभी हनफ़ी मसलक के थे।

प्रश्न : आज कल निकाह व रुख़्सती में बड़ी रसमें अदा की जाती हैं, जैसे पहले मंगनी होती है लड़के वाले की जानिब से कुछ लोग लड़की वालों के यहां आते हैं, लड़की वाला अच्छी दअ्वत का इन्तिज़ाम करता है फिर निकाह की तारीख़ रखी जाती है, लड़की वाले लड़के वालों को कुछ नक़्द पेश करते हैं। फिर मुक़र्ररा तारीख़ पर धूम धाम से बारात आती है बअ्ज़ बारातों में नाच गाना भी होता है। लड़की वाले को भारी दअ्वत का इन्तिज़ाम करना पड़ता है, फिर निकाह के बअ्द भारी जहेज़ के साथ रुख़सती होती है, दूसरे रोज़ लड़की वालों की जानिब से चौथी जाती है, लड़का वाला वलीमा में चौथियारों को भी खिलाता है फिर वह लड़की ले आते हैं बअ्द में जानिबैन की रज़ा मन्दी से आना जाना होता है। शरअ़न इन रस्मीयात का क्या हुक्म है?

उत्तर : जिस लड़की को जिस लड़के से रिश्ता कराना हो दोनो के वालिदैन या क़रीबी अ़ज़ीज़ बाहम बात चीत कर के निकाह की तारीख़ मुक़र्रर करलें। लड़की और लड़के के इ़ल्म में भी बात ले आएं और अगर वह बालिग़ हों और इस सिल्सिले में कोई राए रखते हों तो वालिदैन को उस का लिहाज़ करना चाहिये। मंगनी की दअ्वत की कोई ज़रूरत नहीं, अगर एक फ़रीक़ दूसरे फ़रीक़ के यहाँ दूर से चल कर आया हो तो उस की ख़ातिर तवाज़ुअ़ ज़रूर करें लेकिन इस काम के लिये भीड़ लेकर जाना और दूसरे फ़रीक़ को बड़ी दअ्वत का मुकल्लफ़ करना ठीक नहीं बल्कि यह मुआशरे में बिगाड़ पैदा करना है। फिर मुक़र्ररा तारीख़ पर मुक़र्ररा मक़ाम पर मुसलमानों की मजलिस में और अच्छा है कि किसी नमाज़ के बअ्द नमाज़ियों की मौजूगी में

ईजाब व कुबूल हो जाए, इस काम के लिये चाहे लड़के वाले लड़की वाले के यहाँ आएं चाहे लड़की वाले लड़के वाले के यहाँ जाएं दोनों दूरुस्त लेकिन न लड़का वाला बारात की भीड़ ले जाए न लड़की वाला भीड़ ले जाए। निकाह के बअ्द आए मेहमानों की ख़ातिर तवाज़ुअ् कर के लड़की रुख़्सत कर दी जाए। दूसरे रोज़ लड़के वाला वलीमा करे। बस निकाह में यही होना चाहिये बाक़ी फ़ुज़ूल कामो से हम सब को बच कर निकाह को आसान बनाना चाहिये ताकि निकाह को न लड़के वाला बार समझे न लड़की वाला। यह बात सहीह है कि जो लोग भारी जहेज़ पेश करते हैं उन की लड़कियों के पैग़ाम अच्छे कमासुक लड़कों की तरफ़ से आते हैं और जो लोग जहेज़ नहीं देते या नहीं दे सकते उन की लड़कियों के पैग़ाम मुशकिल से आते हैं, यहाँ तक कि दीनदार लोग भी जहेज़ के लालच में देखे गये, मुआ़शरे का यह बिगाड़ अच्छे अच्छे दीनदारों को डगमगाए हुए है। अल्लाह तआ़ला दीन का काम करने वालों को मुआ़शरे की इस बुराई को दूर करने की तौफ़ीक़ दे। इस बुराई को दूर करने में अब जवानों को आगे बढ़ना चाहिये और उन को जहेज़ लेने से इन्कार करना चाहिये लड़की वालों को भी चाहिये कि वह जहेज़ के लालचीयों से रिश्ता न करें, और ऐसे दीनदार, तन्दुरूस्त मेहनती ग़रीब लड़के को पसन्द करें जो जहेज़ लेने को ना पसन्द करता हो।

प्रश्न : मुसाफ़हे का क्या हुक्म है? कुछ लोगों का कहना है कि मुसाफ़हा सिर्फ़ दाहने हाथ से सुन्नत है, और कुछ का कहना है कि मुसाफ़हा दोनों हाथ से सुन्नत है। सहीह क्या है?

उत्तर : सलाम के बअ्द मुसाफ़हा औरत मर्द दोनों के लिये सुन्नत है, औरत औरत से मुसाफ़हा करे, मर्द मर्द से। ना महरम औरत मर्द बाहम मुसाफ़हा न करें। मुसाफ़हा एक हाथ से भी जाइज़ है :

इब्न मुबारक ने किताबुलबिर्रि व स्सिला में हज़रत अनस (रज़ि0) से रिवायत किया है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम जब किसी से मिलते तो अपना हाथ उस वक़्त/न खींचते जब तक वह खुद न खींच ले।"

इस हदीस से मुसाफ़हा एक हाथ से साबित हुआ। (देखें फ़त्हुलबारी किताबुलइस्तीज़ान बाब 28) और बुख़ारी किताबुलइस्तीज़ान बाब 28 में हदीस न0 6265 इब्ने मसऊ़द (रज़ि0) से रिवायत है मुझे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने तशह्हुद सिखाया और मेरी हथेला आप की दोनों हथेलियों के बीच थी।

इस रिवायत से दोनों हाथों से मुसाफ़हे का सुबूत मिला। पस चाहिये कि एक दूसरे पर एअ्तिराज़ न करें चाहे कोई एक हाथ से मुसाफ़हा करे या दोनों हाथ से, सुन्नत अदा हो जाएगी बाहम लड़ना बुरा है।

आ़म तौर से अहले हदीस हज़रात एक हाथ से मुसाफ़हा करते हैं जब कि अहनाफ़ के यहां दोनों हाथ से मुसाफ़हे का मअ्मूल है इस लिये नावाक़िफ़ लोगों ने इसे मस्लकी इख़्तिलाफ़ में शामिल कर लिया है। ऐसा न चाहिये मुसाफ़हा दोनों तरह जाइज़ है।

❑❑

आख़िर क़ुरआन .....

देखें कि कितना वह उसका पालन कर पा रहा है तथा कितना वह नहीं कर पा रहा या निजी स्वार्थ व अंधता के कारण करना नहीं चाह रहा है।

कुरआन शरीफ भी अपने आप में एक अनोखी पुस्तक है। आपकी गीता, आपके पुराण, आपके उपनिषद्, आपके वेद–इनमें कुरआन शरीफ को भी क्यों नहीं मान सकते आप। अतः अपने वाले समय और भविष्य के युग–मानवों की व्यापक भलाई व उत्तम दृष्टि के लिए अपने भारतीय आर्य ग्रंथों के साथ कुरआन शरीफ भी पढें। उस पर चर्चा एवं बाद–संवाद करें। एक बहुत ही अच्छा माहौल बनेगा। हमारी आगामी संततियों को विकास के बहुत नये पथ मिलेंगे।

जितना भी हम विश्व संस्कृति की ओर उन्मुख होंगे उतना ही एक साझा विश्व संस्कृति का निर्माण होगा। वह विश्व संस्कृति एक दिन समस्त मानवों में एकता स्थापित करने के लिए अपना पथ प्रशसत करेगी।

❑❑

एक करमफर्मा का ख़त

कुछ तअ़रीफ़ के बअ़द लिखते हैं :

"लगंता है आप पर तक़्लीदी ज़ेहनीयत ह़ावी हो गई और आप अपनी रोज़ी रोटी की ख़ातिर मस्लकी फ़िर्क़ों की वकालत करने पर मजबूर हो गये।"

आगे लिखते हैं :

"आप इन्हीं नाजाइज़ मस्लकी फ़िर्क़ों को ह़क़ बजानिब ठहरा रहे हैं।"

और आगे लिखते है :

अल्लाह ने फ़िर्क़ा बनाने वालों और अलग अलग गिरोह बनाने वालों को मुशरिक क़रार दिया है।

उत्तर : मियां साह़िबज़ादे! अल्लाह आप को अ़क़्ले सलीम अ़ता फ़रमाए और आप पर ह़क़्क़ व बातिल खोल दे। जहां तक मेरा सुवाल है तो मैं तअ़ज़िया दार, रस्मी मीलाद ख़्वाँ व फ़तिह़ा ख़्वाँ, उ़र्सों को पसन्द करने वाले के घर पैदा हुआ था। सरकारी स्कूल की तअ़लीम हुई, तब सरकारी स्कूलों में भी उर्दू, फ़ार्सी थी, ख़ुद से कुछ दीनी किताबें पढ़ीं मुआ़शरे से वाक़िफ़ हुआ तो मुसलमानों में ग्रूप बन्दी से दुख हुआ, सारे मुसलमानों को एक करने का इरादा किया और चाहा कि सब तअ़ज़िया दार हों, सब के घर मीलाद हो, फ़ातिह़ा हो, बुज़ुर्गो के मज़ारों पर इज्तिमाअ़ हो वग़ैरह, लेकिन जब मुसदस ह़ाली मुतालअ़े में आई तो कान खड़े हुए, अब दीनी किताबों का मुतालआ़ शुरूअ़ किया तो मज़ह़बी गिरोहों की दो क़िस्में सामने आईं एक की बुन्याद महज़ रस्म परस्ती और जहालत पर नज़र आई जिस पर मैं भी गामज़न था तौबा की तौफ़ीक़ मिली। दूसरों की बुन्याद इल्मी इख़्तिलाफ़ात पर मिली। बहुत जी चाहा और आज भी चाहता है कि काश कि सारी उम्मत अहले ह़दीस हो जाती, ह़नफ़ी हो जाती, मालिकी हो जाती, शाफ़ई हो जाती, ह़ंबली हो जाती, और यह अलग अलग फ़िर्क़े न रहते, मैंने हर मज़ह़ब का गह़रा मुतालआ़ किया, दीन सब का एक है, सब किताब व सुन्नत अपनाए हुए हैं, इख़्तिलाफ़ हुआ है तो किताब व सुन्नत के मफ़ाहीम में वह भी फ़ुरूआ़त में उसूल में सब एक है। अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के ज़माने में यह इख़्तिलाफ़ात उठते तो लोग ह़ुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के पास जाते और ह़ुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम जो फ़रमाते सब मान कर एक हो जाते। अब किस के पास जाएं। ज़ुह्द व तक़्वे वाले चोटी के उ़लमा उन्हों ने जो समझा उस के ख़िलाफ़ कैसे करें मेरी तह़क़ीक़ में, मेरी समझ में यह पांच ग्रोह ह़नफ़ी, मालिकी शाफ़ई, ह़ंबली और अहले ह़दीस इसी बुन्याद पर क़ाइम हुए इख़्तिलाफ़ी मसाइल में जिस ने जो मौक़िफ़ लिया किताब व सुन्नत में उस की गुंजाइश है। इस लिये मैं इन सब को बरह़क़ समझता हूँ। अब मिल्लत के इत्तिह़ाद की एक ही सूरत है कि सब एक दूसरे की तह़क़ीक़ का एह़तिराम करें, सब एक दूसरे को अपना भाई समझें। आप ने सूर–ए–रूम की आयते शरीफ़ा से जो इस्तिदलाल करके मज़ाहिबे अरब़आ जो किताब व सुन्नत ही से माख़ूज़ हैं उन को मुशरिक समझा है यह आप की बड़ी ग़लती है। वहां तो मुशरिकीन व कुफ़्फ़ार के फ़िरक़े का ज़िक्र है, आप ने अहले ईमान पर चस्पां कर दिया अल्लाह आप को हिदायत दे। आप ध्यान दें यह अहले ह़दीस का फ़िर्क़ा कब से वजूद में आया है? औरबताएं, इमाम अबू ह़नीफ़ा, इमाम मालिक, इमाम शाफ़ई, इमाम अह़मद बिन ह़ंबल के ज़माने के किसी अहले ह़दीस मुफ़स्सिर ने सूर–ए–रूम की आयत 31,32 की रौशनी में इन मज़ाहिब को मुशरिक कहा है? या इमाम बुख़ारी, इमाम मुस्लिम ने इन मज़ाहिब को मुशरिक कहा है? अगर नहीं तो आप अपनी ख़बर लीजिये फिर क्या अहले ह़दीस उ़लमा में इख़्तिलाफ़ात नहीं हैं? आप उन को क्या कहेंगे? अल्लाह तआ़ला आप को हिदायत दे और ऐसे कलिमात से और ख़यालात से मह़फ़ूज फरमाए जिन से सारे अअ़्माल अकारत हो जाते हैं।

शेष पृष्ठ 22

आख़िरत की ज़िन्दगी

मौलाना मुजीबुल्लाह नदवी

तौहीद के साथ दूसरी चीज़ जिस पर ईमान लाना ज़रूरी है वह है आख़िरतकी ज़िन्दगी। हमारी एक ज़िन्दगी तो वह है जिस में हम रह रहे हैं, यह दुन्या की ज़िन्दगी है, इस ज़िन्दगी के ख़त्म होने पर दूसरी ज़िन्दगी शुरूअ् होगी वही आख़िरत की ज़िन्दगी है। जो ख़त्म न होगी उस को इस्लामी शरीअ़त में "योमे आख़िरत" का नाम दिया गया है। हमारी इस दुन्या की ज़िन्दगी एक इम्तिहान गाह (परीक्षा स्थल) है। इस में हम अच्छे और बुरे जो अ़मल भी करेंगे, आख़िरत की ज़िन्दगी में उस का पूरा पूरा बदला मिलेगा। जो लोग इस दुन्या में भले काम करें गे वह अल्लाह की सदा रहने वाली निअ़मतों (पुरस्कारों) से नवाज़े जाएंगे और जो लोग इस दुन्या में बुरे होंगे वह अल्लाह की सदा रहने वाली लअ़नत (फिटकार) और अ़ज़ाब (दण्ड) पाएंगे।

आख़िरत के अ़क़ीदे की अहम्मीयत

जिस तरह पवित्र क़ुर्आन में तौहीद (एकेश्वर वाद) का ज़िक्र बार बार मिलता है उसी प्रकार क़ुर्आन पाक का कोई पेज आख़िरत के ज़िक्र से ख़ाली न मिलेगा। इस दून्या में ह़ज़रत आदम अ़लैहिस्सलाम से लेकर नबीये करीम मुह़म्मद (सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम) तक जितने अंबिया इस दुन्या में भेजे गये सबने तौहीद के साथ आख़िरत पर ईमान को ज़रूरी बताया।

हमारे हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने भी अपनी दअ़वत का आग़ाज़ तौहीद व आख़िरत से फ़रमाया। ग़रज़ कि आख़िरत पर ईमान लाए और अ़क़ीदा रखे बिग़ैर दीन का कोई तसव्वुर ही नहीं हो सकता। यौमे आख़िरत का यक़ीन तौहीद का तक़ाज़ा और उस का नतीजा है अगर आख़िरत का यक़ीन न हो तो तौहीद का मानना बेमअ़ना (अनर्थ) हो जाए गा।

अल्लाह तआ़ला पर यक़ीन के साथ जब बन्दे के ज़ेहन में यह बात बैठ जाती है कि इस दुन्या में हम अच्छा या बुरा जो काम कर रहे हैं या करें गे अल्लाह तआ़ला बराहे रास्त उस से वाक़िफ है और उन के बारे में आख़िरत के दिन वह जज़ा या सज़ा का फ़ैसला करे गा तो बन्दा सात पर्दे के भीतर भी बुराई करने से घबराए गा अगर उस से बुराई हो जाएगी तो वह उस से तौबा करेगा। नबीये करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम गुनाहों से पाक और पैदायशी मअ़सूम (गुनाहों से बचे हुए) थे, वह भी आख़िरत के दिन से डरते और कांपते रहते थे, तहज्जुद के वक़्त उठते तो आप की ज़बान पर क़ियामत आई, क़ियामत आई की आवाज़ होती थी, यही ह़ाल सह़ाबा–ए–किराम और बुज़ुरगाने मिल्लत का रहा है, वह हर वक़्त क़ियामत के आने से डरते रहते थे।

क़ुर्आन व ह़दीस से मअ़लूम होता है कि आख़िरत के दो मरह़ले हैं, पहला मरह़ला तो क़ब्र की ज़िन्दगी है और दूसरा मरह़ला क़ियामत आना हिसाब व किताब होना फिर जन्नत या जहन्नम में रहने का है।

जिस तरह बारिश से मुर्दा ज़मीन हरी भरी और ज़िन्दा हो जाती है, इसी तरह मौत के बअ़द जब आदमी सड़ गल कर मिट्टी हो जाएगा, या जल भुन कर राख हो जाएगा या उसे दरया या समुन्दर में मछलिया खा जाएंगी लेकिन जब क़ियामत के दिन अल्लाह के ह़ुक्म से इस्राफ़ील अ़लैहिस्सलाम सूर फूंकेगे तो इस की आवाज़ सुनते ही सारे इन्सान ज़िन्दा हो जाएंगे और अपनी क़बरों से निकल कर ह़श्र के मैदान में जमअ़ हो जाएंगे और उन की अच्छाई या बुराई का हिसाब लिया जाएगा पवित्र क़ुर्आन ने इस प्रकार सूचित किया है। अनुवाद : हम ने बादल के ज़रीअ़े लाभदायक पानी बरसाया फिर उस के ज़रीअ़े बाग़ात और कटने वाला ग़ल्ला उगाया, और खजूर के लम्बे लम्बे दरख़्त उगाए जिन में खजूर के गुछे आपस में ख़ूब मिले हुए हैं, यह बन्दों के रिज़्क़ के लिये है और पानी से मुर्दा ज़मीन को हम

ने जिन्दा कर दिया। इसी प्रकार हम दोबारा सारे लोगों को जिन्दा करेंगे।

(क़ाफ़ : 9–11)

दूसरी जगह है, अनुवाद :

अल्लाह ही की ज़ात है जो हवाओं को भेजती है फिर वह बादलों को उठाती है, फिर हम उस बादल को ख़ुश्क ज़मीन की तरफ़ हांक कर ले जाते हैं फिर हम उस के ज़रीअे मुर्दा ज़मीन को ज़िन्दा करते हैं इसी तरह मरने के बअ्द दोबारा जी उठना है।

(फ़ातिर :9)

जब सूर फूंका जाएगा तो बस यकायक सारे इन्सान अपनी अपनी क़बरों से निकल कर अपने रब के हुज़ूर भागे हुए चले जाएंगे।

(यासीन : 51)

कुछ लोगों के दिमाग़ में यह बात आती है कि आख़िरत की ज़िन्दगी की ज़रूरत क्या है? नीचे के विस्तार से इस सुवाल का पूरा पूरा जवाब मिल जाएगा।

(इनशाअल्लाह)

अगर हम इस दुन्या की ज़िन्दगी और इस में जो अच्छे या बुरे काम करते हैं और हमारे दिल में जो हज़ारों क़िस्म की आरज़ूएं आती हैं उन के बारे में हम ज़रा भी ग़ौर करें तो बड़ी असानी से हमारे दिमाग़ में यह बात आ सकती है कि इस दुन्या के बअ्द एक और विस्तृत दुन्या का होना ज़रूरी है, अगर दुसरी दुन्या न हो तो हमारी इस ज़िन्दगी और उस के अच्छे या बुरे कामों का नतीजा हमारे सामने नहीं आ सकता ना ही हमारी आरज़ूएं पूरी हो सकती हैं।

अल्लाह तआ़ला ने इन्सान को इस दुन्या में अपने इरादा व इख़्तियार में आज़ाद पैदा किया है। इस लिये वह अच्छा या बुरा जो चाहे काम कर सकता है, इतना ही नहीं बल्कि वह इस इख़्तियार की आज़ादी से सहीह् को ग़लत और ग़लत को सही बना कर पेश कर देता है, इस लिये एक ऐसी दुन्या का होना बहुत ज़रूरी है जिस में वह बिल्कुल बे इख़्तियार हो और उस की पूरी ज़िन्दगी के कामों का रिकार्ड मौजूद हो और उस का नतीजा एक ऐसी जात के हाथ में हो जो सरापा रह्म व करम, अ़द्ल व इन्साफ़ हो और जिस के बारे में ज़ुल्म व ज़ियादती और ना इन्साफ़ी का कोई तसव्वुर भी न किया जा सकता हो, क़ुर्आने मजीद की कई आयतों में इस तसव्वुर की वज़ाहत की गई है :–

अनुवाद : क़ियामत का दिन ऐसा होगा कि जिस में किसी शख़्स को लाभ पहुंचाने का इख़्तियार न होगा, सारा इख़्तायार उस दिन अल्लाह के हाथ में होगा।

(अल इन्फ़ितार)

और फ़रमाया :

क़ियामत के दिन हम इन्साफ़ के तराजू मुक़र्रर करेंगे तो सब के साथ इन्साफ़ होगा किसी पर तनिक भर भी ज़ुल्म न होगा। (अंबिया :47)

जो लोग बुराई कर रहे हैं क्या उन लोगों का गुमान है कि हम उन को ईमान लाने वालों और भले काम करने वालों के बराबर कर देंगे, और क्या उन दोनों की ज़िन्दगी और मौत बराबर हो सकती है। अगर यह ऐसा कहते हैं तो इन का यह फ़ैसला इन्तिहाई ग़लत है।

(जासियह् : 21)

जिस दिन लोग अलग अलग गिरोहों में वापस होंगे (यअ़नी क़ियामत के दिन) ताकि अपने अ़मलों को देखें तो जिस ने ज़र्रा (कण) भर नेकी की होगी वह उसे देखेगा और जिस ने छोटी से छोटी बुराई की होगी वह उसे देखे गा। (ज़िलज़ाल)

जिस की आखों के सामने आख़िरत की ज़िन्दगी होगी वह दुन्या में गुनाहों से ज़रूर बचेगा।

दुन्या से फसाद दूर करने के लिये आख़िरत की ह़क़ीक़त (वास्तविकता) जिस में किसी शक शंका की गुंजाइश नहीं लोगों में आम करना चाहिये।

❑❑

एक करमफ़र्मा.....

आप ज़रा ध्यान दें हमारे दारुल उ़लूम नदवतु उलमा में जो अहले ह़दीस असातिज़ा तअ़्लीम देते हैं वह क्या महज़ रोज़ी रोटी के लिये मुशरिकों के साथ हैं और जो अहले ह़दीस तलबा की बड़ी तअ़्दाद यहाँ ह़नफ़ी शाफ़ई उ़लमा से इतिफादा कर रही है, उस का मक़सद महज़ रोज़ी रोटी है? अल्लाह आप को समझ दे।

❑❑

तरबूज़

-हबीबुल्लाह आज़मी

तरबूज एक मजेदार और मीठा फल ही नहीं एक बहुमुल्य दवा भी है और गर्मी के दिनों में पैदा होने वाले फलों में बहुत महत्वपूर्ण भी है लेकिन अधिक संख्या में पैदा होने और सस्ता होने के कारण लोगों के नजदीक इस की कद्र बिल्कुल नहीं होती। तरबूज खाने से हमें शक्ति और प्रफुल्लता मिलती है। यह हमारे शरीर की बहुत सी बीमारियों को दूर करने की क्षमता रखता है। प्यास को कम करने और तस्कीन पहुंचाने में तो इस की कोई दूसरी मिसाल नहीं है। तरबूज को मल मल के साफ कपड़े में रख कर निचोड़ कर उस का रस निकाल कर मिश्री मिला कर पी लीजिये कितनी ही तेज प्यास हो समाप्त हो जाएगी। इस के उपभोग से गर्मी का निवारण भी हाता है और पित व खून की गर्मी भी दूर हो जाती है अगर धूप की तपिश या आग के निकट रह. कर काम करने के कारण बुखार हो जाए तो उस के लिए तरबूज बहुत लाभदाय चीज है। दिन में दो तीन बार तरबूज खाएं या जितना जी चाहे खाएं या उस का रस निकाल कर मिश्री मिला कर पीएं। उस को टाइफाएड में भी आहार के रूप में प्रयोग किया जा सकता है। इससे बीमार को काफी आराम मिलता है। तरबूज के रस में सौंफ का अर्क़ मिला कर पीने से बूख खूब लगती है। तरबूज पर काला जीरा, काली मिर्च केचूर्ण को छिड़क कर खाया जाए तो पाचन शक्ति के कमजोर लोगों के लिए आमाशय की बहुत अच्छी दवा है।

तरबूज खूब पेशाब लाता है और कब्ज़ भी दूर करता है। तरबूज के इस्तेमाल से जहां पेशाब खुल कर आता हे वहीं शौच भी खूब साफ होती है। कब्ज़ के मरीजों को इसे अवश्य आजमाना चाहिये और जब तक बाजार में मिलता है खूब इस्तेमाल करना चाहिये। तरबूज क़ै और सीने के जलन के लिए भी लाभदायक है। ऐसी दशा में चाहिये कि तरबूज के एक गिलास रस में खाण्ड या मिश्री मिलाकर दिन में कई बार प्रयोग करें। आठ दस दिन में दोनों शिकायतें जाती रहेंगी। आप को यह जान कर आशचर्य होगा कि सर्द और तर तासीर रखने वाला यह तरबूज खांसी के लिए भी लाभदायक है। एक गिलास तरबूज के पानी में तीन चार माशा पिसी हुई सोंठ मिलाएं उस में एक तोला शहद डाल कर पीएं। कैसी ही खांसी होगी पता नहीं चलेगा कि किधर गई। तरबूज दिल की धड़कन और दिल की कमजोरी के लिए भी लाजवाब चीज है।

तरबूज के गूदे और रस के अतिरिक्त इस का छिलका और बीज भी बड़े काम की चीज है। जैसे तरबूज के बीज की गूदी को एक तोला लेकर उसको पीस कर, उस में थोड़ी मिश्री मिला कर पिलाने से बन्द पिशाब तुरंत जारी हो जाता है। इससे मसाने की पत्थरी भी टुकड़े टुकड़े हो कर निकल जाती है। तरबूज के गूदे को पीस कर फटे हुए होंटों पर लगाने से फटे होंट भी ठीक हो जाते हैं। तरबूज के बीज की गूदी पागलपन और सनक के लिए भी लाभदायक है। तरबूज का छिल्का तिल्ली की सूजन में बहुत लाभ प्रद पाया गया है। तरबूज के छिलके को सुखा कर एक तोला चूर्ण शकर मिला कर रोजाना सुबह शाम खिलाएं। खुदा ने चाहा तो तिल्ली की सूजन जाती रहेगी। तरबूज के प्रयोग के सिल्सिले में कुछ सावधानी भी जरूरी है अन्यथा लाभ की जगह हानि भी उठानी पड़ सकती है। जिस रोज तरबूज खाएं चावल न खाएं। तरबूज के साथ चावल खाने से पेट में भारी पन और वायु पैदा होने का डर रहता है। बलगमी मिजाज रखने वाले तरबूज खाने के बाद शहद खा लिया करें तो उन्हें नुक्सान नहीं करेगा। तरबूज में विटामिन और फासफोरस के अतिरिक्त फौलाद (लौह) भी अच्छी मात्रा में होता है जो शरीर को प्रफुल्लता व चुस्ती के साथ शाक्ति भी प्रदान करता है अतएवं जब तक उपलब्ध हो खाएं और लाभ उठाएं।

(राष्ट्री सहारा उर्दू समाचार)

❑❑

हरपीज जौस्टर

होम्योपैथी उपचार में ही नहीं बचाव में भी सक्षम

डा० जीतेन्द्र

जिन पाठक बन्धुओं ने असहनीय दर्द से पीड़ित और त्वचा पर लाल रंग के फफोलों जैसे रैश से ग्रस्त को देखा है वे हरपीज जौस्टर से अच्छी तरह से वाफिक होंगे। हरपीज जौस्टर यानि शिंगल्स (Shingles) एक वाइरल रोग है जो एक विशेष प्रकार के वाइरस जिसे हम **वैरिसैला जौस्टर** [Varicella-(V-Z) अपतने, कहते हैं के संक्रमण के कारण होता है। जी हाँ आपने ठीक पहचाना यह वही वाइरस है जो चिकनपाक्स के लिये जिम्मेदार होता है इसीलिए वैरिसैल जौस्टर वाइरस को **ह्यूमन (अल्फा) हरपीज वाइरस** [Human (Alpha) अपतने, के नाम से भी जाना जाता है वैरिसैला जौस्टर वाइरस के प्राथकिमक सक्रमण के कारण चिकनपाक्स होता है। प्राथमिक संक्रमण से उबरने के बाद आमतौर पर रोगी के सैंसरी गैंगलिया में एक प्रकार का छिपा संक्रमण (लैटेन्ट इन्फैक्शन) स्थापित हो जाता है जो कि वर्षों तक बिना किसी लक्षण के बना रहता है। जब आयु वृद्धि के स्थान या इम्युनो–सप्रैसिव उपचार के चलते शरीर की सैल मीडियोटिड प्रतिरोधकता (सैल मीडियेटिड इम्युनिटी) घटती जाती है। तब वाइरस पुनः जागृत हो जाता है और रोगी को हरपीज जौस्टर हो जाता है। बेहतर तरीके से कहा जाए तो वैरिसैला जौस्टर वाइरस के संक्रमण के कारण अन इम्युनाइज्ड व्यक्ति में चिकनपाक्स होता है और इम्युनाइज्ड व्यक्ति में जिसने पिछले चिकनपाक्स के संक्रमण के दौरान आंशिक प्रतिरोधकता अर्जित कर ली है, में हरपीज जौस्टर होता है पोस्टीरियर रूट गैंगलिया के वाइरस द्वारा संक्रमण के कारण दर्द और प्रभावित नर्व के वितरण वाले त्वचा क्षेत्र में रैश प्रकट होते हैं। और रोग की पहचान हरपीज जौस्टर के रूप में होती है। कोई भी आयु हरपीज जौस्टर से सुरक्षित नहीं कही जा सकती है लेकिन आमतौर पर यह 50 वर्ष की आयु के बाद अधिक देखने को मिलता है। हरपीज जौस्टर का एक बार संक्रमण होने पर हरपीज जौस्टर के प्रति अच्छी खासी प्रतिरोधकता पनप जाती है। और जीवन में दूसरी बार इसके होने की सम्भावना बहुत कम (2: या और कम) होती है। प्रोड्रोमल या प्री इरपटिव लक्षणों में ठंड के साथ बुखार, थकावट एवं कमजोरी और पेट खराब होना देखा जाता है और इनकी शुरूआत रोग के प्रमुख लक्षणों के प्रकट होने के 3–4 दिन पहले से हो जाती है। इस दौरान भविष्य के इरप्शन क्षेत्रों में दर्द हो भी सकता है और नहीं भी। चौथे या पॉचवे दिन वैसाइकल्स (Vesicles) की खेंप प्रकट होती है जो देखन में लाल फफोलों जैसी होती है। ये वैसाइकल्स एक या अधिक प्रभावित पोस्टीरियर रूट गैंगलिया के वितरण वाले त्वचा क्षेत्र में प्रकट होते हैं। प्रभावित क्षेत्र छूने पर ज्यादा संवेदनशील (Hyperesthetic) होता है और असहनीय दर्द मरीज को परेशान करता है। हरपीज जौस्टर के रैश की खास बात यह होती है कि इनका फैलाव एक न्यूरल सैग्मैंट तक सीमित रहता है और ये शरीर के एक ही हिस्से में सीमित होते हैं अर्थात् यूनिलैट्ल व एसिमिट्रिकल होते है। रैश प्रकट होने के 5–6 दिन बाद से ये सूखना शुंरू हो जाते है। और इन पर पपड़ी (स्कैब) आने लगती है। हरपीज जौस्टर की सबसे सामान्य जटिलता दर्द का बना रहना है (1 से 6 माह या और अधिक समय तक), जिसे पोस्ट हरपैटिक न्यूरैलजिया कहते हैं और यह काफी कष्टदायक होता है। इम्युनो–सप्रैशन से ग्रस्त रोगियों में रैश एक न्यूरल सैग्मैंट तक ही सीमित न रह कर अन्य हिस्सों में भी फैल जाते हैं और यह अवस्था डिस्सीमिनेटिड हरपीज जौस्टर (Disseminated herpes zoster) कहलाती है।

शेष पृष्ठ 30

भूकम्प या क़ियामत (महाप्रलय) की चेतावनी

अयाज़ अहमद फारुकी

ऐ लोगो, अपने रब से डरो! बेशक कियामत का भूकम्प बड़ी भारी चीज है। जिस दिन तुम उसे देखो गे, हर दूध पिलाने वाली अपने दूध पीते बच्चे को भूल जाएगी और प्रत्येक गर्भ वाली अपना गर्भ डाल देगी। और लोग तुम्हें मदहोश नज़र आएंगे वे मदहोश न होंगे। बल्कि अल्लाह का अजाब बड़ा ही सख्त है।

(सूरह 22 अलहज आयत 1–2)

पिछले दशकों में भूकम्पों की जो श्रंखला सी चल पड़ी है आए दिन कहीं न कहीं छोटे बड़े भूकम्प आते रहते हैं उन्हों ने वैज्ञानिकों को भी अपनी ओर आकर्षित किया है अब तो सभी भूगर्भ शास्त्री और भुगोल शास्त्री भी इस विषय में भविष्य वाणी करने लगे है। हाल ही में 26 मार्च 2008 टाइम्स ऑफ इण्डिया में इस सम्बन्ध में एक चौंका देने वाली खोज छपी है जिसका शीर्षक था– "FIRE UNDERGROUND" इस रिपोर्ट में कहा गया है कि अमेरिका का कायलो स्टोन पार्क एक ज्वाला मुखी के ऊपर स्थित है जो कि पार्क के नीचे केवल पाँच मील नीचे है। यदि यह ज्वालामुखी फट गया तो अमेरिका का एक बहुत बड़ा क्षेत्र खण्डर और लाशो के ढेर में बदल जाएगा।

जैसा कि भूगर्भ शास्त्री बताते हैं कि पृथ्वी का भीतरी भाग बहुत अधिक गर्म सय्याल (Hot semi melten) से बना हुआ है जो ज्वाला मुखी के फटने पर लावा के रूप में दिखाई पड़ता है। यह हमारी पृथ्वी को कई प्रकार से प्रभावित करता है कई बार भूकम्प का कारण भी बनता है। हाल में आया हुआ सुनामी तूफान उसी के कारण पैदा हुआ था।

भूकम्प एक भयानक शब्द है यह एक ऐसा कुदरती हमला है जिस के मुकाबले में आदमी बिल्कुल बे बस है।

जब हम पृथ्वी की अन्दरूनी बनावट पर विचार करते हैं तो पता चलता है कि हम एक आग के जलते हुए ढ़ेर पर आबाद हैं। पृथ्वी की यह परत जिस पर दुनिया आबाद है इस की हालत ऐसी ही है जैसे सेब का ऊपरी छिलका हम छिलके पर आबाद हैं और यह भूल जाते हैं कि इस छिलके के नीचे सम्पूर्ण भाग आग ही आग है।

एक भूगोल शास्त्री तो यह कहता है कि हमारे आबाद शहर और नीले समन्दर के नीचे एक कुदरती नर्क ~~चेलेपवंस भ्मसलद्ध~~ दहक रहा है जैसे कि हम एक बहुत बड़े डांइना माइट के ऊपर खड़े हैं जो किसी भी समय फट कर सम्पूर्ण पृथ्वी को समाप्त कर सकता है।

वास्तविकता भी यही है कि अल्लाह ने यह संसार अनन्त काल के लिए नहीं बनाया बल्कि यह संसार एक निश्चित समय के लिए बनाया गया है। आज की वैज्ञानिक खोजें भी यही बता रही है कि पृथ्वी के भीतर स्थित ज्वाला मुखी और भूकम्प इस बात की चेतावनी है कि इस संसार की अवधि इन की हल चल से किसी भी समय समाप्त हो सकती है।

कुरआन की सूरह बनी इसराईल की आयत 99 में अल्लाह फरमाता है कि उसने इस संसार के लिए एक अवधि निश्चित कर रखी हैं और इसमें कोई शक नहीं।

वैज्ञानिकों की ज्वाला मुखी और भूकम्प की खोजें एक प्रकार से कियामत की ही सच्चाई की ओर इशारा हैं। और इसी की चेतावनी हैं।

इस आधार पर भी देखा जाए तो वास्तव में वह समय आ गया है आदमी गफलत से बाहर आ जाए और परलोक (आखिरत) की तैय्यारी में लग जाए।

हमें याद रखना चाहिए कि केवल अमेरिका के कायलो स्टोन पार्क के साथ ही यह मामला नहीं है बल्कि सम्पूर्ण पृथ्वी का यही हाल है।

इस सम्बन्ध में पैगम्बरे इस्लाम (स0 अ0) ने कोई 1400 वर्ष से पहले ही यह कह दिया था कि महाप्रलय (कियामत) और मेरे बीच केवल इतनी दूरी है जितनी दो उँगलियों के बीच होती है। वर्तमान समय में वैज्ञानिकों ने भी इस की पुष्टि इस प्रकार की है यह संसार अपने अन्तिम दौर (चरण) में है। हाल ही में NASA के वैज्ञानिक James Hansen ने अपनी खोज में कहा है कि मात्र 20 वर्ष बाद सब कुछ नष्ट हो सकता है।

शेष पृष्ठ 12

भारत का संक्षिप्त इतिहास

मुग़ल काल

— इदारा

पानीपत युद्ध में बाबर की जीत के कारण

(1) इब्राहीम लोदी एक अनुभव– शून्य नवयुवक था। न उसे बड़े–बड़े युद्धों में भाग लेने का कभी अवसर प्राप्त हुआ था और न यह विदेशी रण–पद्धति से परिचित था। ऐसी स्थिति में वह बाबर की सेना का सामना करने की क्षमता नहीं रखता था।

(2) बाबर की सेना की रणकुशलता– बाबर के सैनिक बड़े ही वीर, साहसी तथा रण–कुशल थे। उन्हें युद्धों का व्यापक अनुभव था। वे पैंतरेबाजी में बड़े ही वीर, कुशल थे और अपने को परिस्थितियों के अनुकूल बना लेने को बड़ी क्षमता रखते थे। वास्तव में आपत्ति तथा संघर्ष में सदैव संलग्न रहने के कारण उसके सैनिकों की रण–कुशलता बहुत बढ़ गई थी और उसमें अदभ्य उत्साह तथा साहस पैदा हो गया था। निर्धन देश के निवासी होने के कारण वे धन–प्राप्ति के लिए अपने प्राणों की बाजी लगा देते थे। इब्राहीम लोदी के सैनिक उतने रण–कुशल न थे जितने बाबर के। उन्हें न तो युद्धों का उतना अनुभव था और न उनमें उतना उत्साह तथा साहस ही था जितना बाबर के सैनिकों में।

(3) बाबर के योग्य सेनापतियों की सेवाएँ– बाबर यद्यपि स्वयं प्रधान सेना–पति था परन्तु अपनी सेना के विभिन्न अंगों का संचालन उसने बड़े ही योग्य तथा कुशल सेनापतियों को सौंप रखा था। उसे विशेषकर दो तुर्की सेनापतियों की सेवाएँ प्राप्त थीं जो नई–नई रण–पद्धतियों को कार्यान्वित करने में बड़े ही कुशल थे। बाबर का पुत्र हुमायूँ भी एक कुशल सेनानायक था। इब्राहीम लोदी को इस प्रकार के योग्य सेनापतियों की सेवाएँ प्राप्त न थीं। वास्तव में उसे अपने आदमियों का पूरा सहयोग न प्राप्त हो सका। दौलत खाँ तथा पंजाब के अन्य अमीर भी उसके विरुद्ध षड्यन्त्र रचते रहे और बाबर के ही हाथ मजबूत करते रहे।

(4) बाबर की कुशल ब्यूह–रचना– बाबर ब्यूह–रचना में बड़ा कुशल था। पानीपत के मैदान में पहुँते ही उसने अपनी ब्यूह–रचना का कार्य आरम्भ कर दिया था। पहले उसने पानीपत के नगर, खाइयों, कटे हुए पेड़ों तथा कँटीली झाड़ियों तथा खम्भों को खड़ा कर इब्राहीम लोदी की सेना की प्रगति को सहसा रोकने की व्यवस्था की और फिर केन्द्र में तौपों और दोनों पक्षों में तेजी से आक्रमण करने वाले अश्वारोहियों की व्यवस्था की, जो सेना की गति भंग हो जाने पर उसे चारों ओर से घेर लें यह बड़ी ही वैज्ञानिक ब्यूह–रचना थी जिसमें रक्षात्मक तथा आक्रमणात्मक दोनों प्रकार की व्यवस्था थीं इसके विपरीत इब्राहीम लोदी की ब्यूह–रचना परिस्थितियों के अनुकूल न थी। उसने अपनी सेना की सुरक्षा की कोई व्यवस्था न की। उसने हाथियों को सामने रखा जो बाबर के तोपखाने के सामने ठहर नहीं सकते थे वरन् जब अग्नि–वर्षा प्रारम्भ हो गई तब हाथी फीलवानों के कब्जे से बाहर हो गये और उन्होंने अपने ही सैनिकों को रौंद डाला और उनमें भगदड़ मच गयी।

(5) बाबर का कुशल सैन्य संचालन– बाबर ने अपनी सेना का संचालन बड़ी कुशलता से किया था। छोटी होने के कारण उसकी सेना में गति थी। वह तेजी से आक्रमण कर सकती थी और संकट आने पर भाग भी सकती थी। उसकी सेना के बाईं तथा दाहिनी ओर के सैनिक बड़ी तेजी से शत्रु पर आक्रमण करते थे और उसे चारों ओर से घेर लेने का प्रयत्न करते थे। वह अपने तौपखाने तथा अपने अश्वारोहियों द्वारा ऐसा संयुक्त आक्रमण करता था कि उसके सामने ठहरना कठिन हो जाता था। इसके विपरीत इब्राहीम लोदी में सैन्य–संचालन की कुशलता न थी।

उसकी सेना इतनी विशाल थी कि उसका सुचारु रीति से संचालन करना कठिन था। उसमें न गति ही थी और न पैंतरेबाजी। जब बाबर की गाड़ियों के कारण सेना का आगे बढ़ना रुक गया और पीछे की सेना आगे बढ़ने का प्रयत्न करती गई तब सेना में धकापेल आरम्भ हो गई। वह मनुष्यों का एक ढेर बन गई और बाबर की सेना ने भीषण नर–संहार आरम्भ कर दिया।

(6) बाबर द्वारा तोपखाने का प्रयोग– अभी तक उत्तर–पश्चिम के मार्ग से भारत पर जितने आक्रमण हुऐ थे उनमें किसी ने भी तोपखाने का प्रयोग नहीं किया था। अतएवं भारतवासी इस प्रकार के युद्ध के अभ्यसत न थे। परिणाम यह हुआ कि जब तोपों ने अग्नि–वर्षा आरम्भ की और अश्वारोहियों ने तेजी से आक्रमण किया तब इब्राहीम लोदी की सेना भाग खड़ी हुई। तोपखाने के अतिरिक्त बाबर के सैनिक इब्राहीम लोदी के सैनिकों से अधिक अच्छे अस्त्र–शस्त्रों से सुसज्जित थे। इससे वे अधिक सफलतापूर्वक प्रहार कर सकते थे। आक्रमणकारियों से भयभीत होकर लोदी की सेना इधर–उधर भाग खड़ी हुई। उन नगरों के फाटक, जिनकी किलेबन्दी की गई थी, बन्द कर दिये और सभी जगह लोग अपनी सुरक्षा की व्यवस्था में लग गये। इस युद्ध ने अफगानों के संगठन को छित्र–भित्र कर दिया और उसका नैतिक बल समाप्त हो गया। परन्तु पानीपत के युद्ध का सबसे बड़ा परिणाम यह हुआ कि भारत में मुगल–साम्राज्य की स्थापना हो गई जो अपनी शान–शौकत, अपनी शक्ति तथा अपनी सभ्यता एवं संस्कृति में मुस्लिम जगत् के राज्यों में सबसे अधिक महान्ता और जो रोमन साम्राज्य की बराबरी का दावा कर सकता था। पानीपत की विजय से बाबर के गौरव तथा उसकी प्रतिष्ठा में बड़ी वृद्धि हो गई और उसकी गणना एशिया के महान् विजेताओं में होने लगी। इस युद्ध से राजपूतों को बड़ी निराशा हुई क्योंकि लोदी साम्राज्य के बाद दिल्ली में राजपूत राज्य स्थापित करने का उनका स्वप्न समाप्त हो गया।

पानीपत के युद्ध के उपरान्त बाबर की समस्याएँ– यद्यपि पानीपत के मैदान में विजय प्राप्त कर लेने के उपरान्त बाबर ने दिल्ली तथा आगरे पर अपना प्रभुत्व स्थापित कर लिया था परन्तु अभी उसे अनेक समस्याओं का सामना करना था। उसकी पहली समस्या थी कि वह उन लोगों में विश्वास उत्पन्न करना चाहता था जो या तो अपने नगरों को छोड़ कर भागे जा रहे थे या फाटकों को बन्द करं सुरक्षा की व्यवस्था करने में लगे हुए थे। मुगल सर्वत्र घृणा की दृष्टि से देखे जाते थे और अनुशासनहीनता का प्रकोप सर्वत्र व्याप्त था। खाद्य–सामग्री की बड़ी कमी थी और चोरी तथा डकैती का प्रकोप बढ़ रहा था।

बाबर ने इस समस्या का बड़ी सावधानी तथा चतुराई के साथ सामना किया। उसने उदारता तथा सहानुभूति की नीति का अनुशरण किया और अपने व्यवहार से यह स्पष्ट कर दिया कि जो लोग उसकी शरण में आकर उसके प्रभुत्व को स्वीकार कर लेंगे उनके साथ वह सद्व्यवहार करेगा और उन्हें यथा–योग्य स्थान देगा।

बाबर की दूसरी समस्या बड़े–बड़े अफगान सरदारों की थी। यह अफगान सरदार अपनी सेनाओं के साथ इधर–उधर घूम रहे थे और उनकी समझ में यह नहीं आ रहा था कि क्या करें। इनमें से अनेक स्वतन्त्र बन बैठे और अपनी शक्ति को बढ़ाने में लग गये।

इस समस्या का निराकरण दो प्रकार से किया जा सकता था। पहला उपाय तो यह था कि उनके साथ उदारता तथा दया का व्यवहार कर वह उन्हें अपने निकट ले आता और दूसरा उपाय यह था कि वह अपने सैनिक बल से उनका दमन कर उन्हें अपने आधिपत्य में लाता। बाबर ने इन दोनों ही उपायों का प्रयोग किया। उसने वचन दिया कि जो अफगान सरदार उसके प्रभुत्व को स्वीकार कर लेंगे उनकी वह रक्षा करेगा और उन्हें बड़ी–बड़ी जागीरें देगा। इसका परिणाम यह हुआ कि बहुत से अफगान सरदार आकर बाबर से मिल गये जिनके साथ उसने बड़ी उदारता का व्यवहार किया और उन्हें बड़ी–बड़ी जागीरें दे दीं। शेष अफगान सरदारों की समस्या को सुलझाने के लिए

उसने अविजयित भू–भागों को अपने सरदारों में बाँट दिया और उन्हें आदेश दिया कि वे उन पर विजय प्राप्त करें और वहाँ पर शान्ति तथा सुव्यवस्था स्थापित कर वहाँ का शासन चलायें। जो अफगान सरदार बड़े ही शक्तिशाली थे और सरलता से नियन्त्रण में नहीं लाये जा सकते थे उन पर बाद में विजय प्राप्त कर प्रभुत्व स्थापित करने का निश्चय किया था।

बाबर की तीसरी समस्या अपने सैनिकों तथा सरदारों की थी जो घर लौट जाने के लिए आतुर हो रहे थे। यद्यपि बाबर को दिल्ली तथा आगरा में जो विशाल कोष प्राप्त हुआ था उसे उसने अपने सैनिकों तथा सरदारों से मुक्त–हस्त होकर बाँटा परन्तु वे भारत में ठहरने के लिए उद्यत न थे। इसके कई कारण थे। प्रथम तो यह कि वह लोग पहाड़ियों तथा घाटियों के निवासी होने के कारण भारत की गर्मी को सहन करने में असमर्थ हो रहे थे और दूसरे यह कि चूंकि किसान लोग अपनी खेती–बारी छोड़कर भाग खड़े हुए थे; अतएव खाने–पीने की सामग्री का बड़ा अभाव हो गया था और तीसरे यह कि जब उन्हें या ज्ञात हो गया कि बाबर ने भारत में रहने का निश्चय कर लिया है तब वह समझ गये कि उन्हें भी बहुत दिनों तक हिन्दुस्तान में रहना पड़ेगा और निरन्तर युद्ध तथा संघर्ष करना पड़ेगा।

इस समस्या को सुलझाने के लिए उसने अपने आदमियों की एक सभा की और उसमें उसने बड़ा ही ओजपूर्ण भाषण दिया। उसने बड़े ही स्पष्ट शब्दों में कहा–"अनेक वर्षों के परिश्रम से, कठिनाइयों का सामना करके लम्बी यात्रा करके, अपने तथा अपनी सेना को युद्ध में भीषण हत्या–काण्ड करके हमने ईश्वर की कृपा से शत्रुओं के झुण्ड को परास्त किया है जिससे हम उनकी विशाल भूमि को प्राप्त कर सके और अब वह कौन–सी शक्ति है जो हमें विवश कर रही है, कौन–सी ऐसी आवश्यकता उत्पन्न हो गई है कि हम "अकारण ही उन प्रदेशों को छोड़ दें जिन्हें हमने अपने जीवन को संकट में डालकर प्राप्त किया है।" बाबर के इस ओजपूर्ण भाषण का उसके अनुयायियों पर इतना प्रभाव पड़ा कि कुछ को छोड़कर शेष ने भारत में रहने और बाबर के उद्देश्य को पूरा करने का निश्चय कर लिया।

बाबर की चौथी समस्या राजपूतों की थी। इन दिनों राजपूतों का नेता मेवाड़ का शासक राणा संग्राम सिंह था जिसे राना साँगा के नाम से भी पुकारा गया है। कहा जाता है कि वह अट्ठारह युद्धों में विजय प्राप्त कर चुका था और युद्ध में ही उसने अपनी एक आँख, एक भुजा तथा एक पैर खो दिये थे और उसके शरीर पर अस्सी घावों के चिह्न विद्यमान थे। वह बड़ा ही महत्त्वाकांक्षी व्यक्ति था और लोदी साम्राज्य के ध्वंसावशेष पर अपनी सत्ता के स्थापित करने की बहुत दिनों से कामना कर रहा था। पानीपत के युद्ध में वह इसलिए भाग नहीं ले सका था कि उसे गुजरात के शासक मुजफ्फर शाह की ओर से आक्रमण की आशंका थी परन्तु अब मुजफ्फर शाह की मृतु हो चुकी थी और राणा का ध्यान दिल्ली तथा आगरे की ओर आकृष्ट हुआ जहाँ पर बाबर ने अपना प्रभुत्व स्थापित कर लिया था। राना साँगा का अनुमान था कि बाबर अपने पूर्वज तैमूर की भाँति दिल्ली को लूट–पाट कर काबुल लौट जायगा परन्तु बाबर ने भारत में रहने और अपने वंश को स्थायी रूप में साम्राज्य स्थापित करने का निश्चय कर लिया। ऐसी स्थिति में राणा तथा बाबर में संघर्ष होना अनिवार्य होना अनिवार्य था क्योंकि बाबर की विजय ने राणा की कामनाओं पर पानी फेर दिया था।

❑❑

फ़ातिहे का तरीक़ा

कोई भी नेक काम कर के अल्लाह से दुआ करें कि ऐ अल्लाह मेरे इस काम को क़बूल फ़रमा और इस का सवाब फ़ुलाँ की रूह को बख़्श दे, बस फ़ातिहा हो गया , बड़े पीर साहिब का फातिहा भी इसी तरह होगा किसी ज़रूरत मन्द को कुछ दे कर, कुर्आन शरीफ़ की तिलावत कर के अल्लाह से दआ कीजिये कि इसका सवाब शैख़ अब्दुल क़ादिर जीलानी (रह0) की रूह को बख़्श दीजिये।

क़िस्त 13

हम कैसे पढ़ायें?

शिक्षकों के लिय

तीसरा अध्याय

– डॉ. सलामत उल्लाह

साइंस

प्रकृति अध्ययन का काम कक्षा एक से शुरू होगा। बच्चों को आमतौर पर कुदरत की चीजों से बड़ी दिलचस्पी होती है वह उन्हें बड़े ध्यान से देखते हैं और समझने की कोशिश करते हैं। प्रायः देखा गया है कि बच्चे, देखने में, बहुत मामूली चीजों की घंटों छान बीन करते रहते हैं। कीड़े मकोड़ों, फूल पौधों को देखने में इतने मगन हो जाते हैं कि उनको कुछ खबर नहीं होती कि इधर क्या हो रहा है हमें उनके शौक से फायदा उठाना चाहिये।

आस पास के वृक्षों, पौधों और जानवरों का अध्ययन उनके कुदरती माहौल में कराना चाहिये। निरीक्षण से बच्चे इनके बारे में बड़ी रोचक और लाभदायक मालूमात हासिल करेंगे। आसमान में सूरज चाँद और तारों के स्थानीय परिवर्तन भी बच्चों को नोट कराना चाहिये। प्राकृतिक भूगोल के शिक्षण में भी यह बातें मदद देंगी। इन पाठों का मकसद यह होना चाहिये कि बच्चे प्राकृतिक दृश्यों से आनन्दित होने लगें और इन्हें समझने की कोशिश करने लगें। यह पाठ भाषा और ड्राइंग से जोड़े जा सकते हैं। प्रकृति अध्ययन बहुत से दूसरे विषयों के शिक्षण में भी बुनियाद का काम देगा। इस के अलावा बच्चों को स्वास्थ और सफाई के बारे में व्यवहारिक बातें बतानी चाहियें और उन पर अमल कराना चाहिये।

जनरल साइंस की दूसरी मंजिल ग्यारह बारह साल की उम्र में शुरू होगी। यहाँ शिक्षण अधिक सुनियोजित होगी। अब भी शैक्षिक विषय का अधिकांश वनस्पत्ति और जीव विज्ञान से सम्बन्धित होगा।

प्राथमिक विद्यालय के अन्तिम दो साल के पाठ्यक्रम में शरीर विज्ञान और रसायन शास्त्र शामिल होगा। इस स्तर पर शरीर के विभिन्न भागों का ज्ञान, स्वास्थ्य के सिद्धान्त, और शारीरिक शिक्षा के बारे में महत्वपूर्ण मालूमात देना भी जरूरी है। लेकिन शिक्षण यह भी अधिकतर निरीक्षण और प्रयोग पर आधारित होगी।

हिसाब

हिसाब की तालीम गिनती से शुरू होगी। पहली कक्षा में बच्चों को विभिन्न वस्तुओं की संख्या मालूम करने की क्षमतां हो जानी चाहिये। इस क्रम में यह कल्पना होना जरूरी है कि हमारी गिनती का नियम दहाई पर आधारित है। प्रारम्भिक तीन चार कक्षाओं में चारों सादा और मिश्रित नियम अर्थात जोड़, घटाव, गुणा और भाग आ जाने चाहियें। बारह से चौदह साल की उम्र में भिन्न, दशमलव और अनुपात की परिकल्पना हो जाना चाहिये। व्यवहारिक गणित और बही खाते का काम भी साथ साथ सिखाना जरूरी है।

चूँकि गणित एक ऐसा विषय है जिस का व्यवहारिक महत्व बहुत है और इस का प्रयोग अन्य विषयों जैसे भूगोल और साइंस में बहुत होता है, इसलिये इस के प्रारम्भिक नियमों में बहुत अभ्यास होना चाहिये। शिक्षक को तब तक इतमीनान नहीं होना चाहिये जब तक कि हर बच्चा तेजी से और ठीक ठीक इन नियमों का प्रयोग न कर सके।

बीजगणित

बीजगणित की शिक्षा उस समय तक स्थगित रखनी चाहिये जब तक गणित के बुनियादी नियमों का ज्ञान हो जाये। यह हिसाब के बहुत से कायदों के क्रम में शुरू किया जा सकता है। अनुपात और प्रतिशत के प्रश्न इस की मदद से आसानी से निकलवाये जा सकते हैं। "ऊर्जा" की परिकल्पना छेत्र फल और आयतन के क्रम में पैदा की जा सकती है। इस प्रकार प्राथमिक विद्यालय के अन्तिम दो

साल में विद्यार्थी "संख्या" के ज्ञान को बीजगणित की सहायता से बढ़ा सकता है और माध्यमिक विद्यालय में बीजगणित की विधिवत शिक्षा के लिये तैयार हो सकता है।

रेखागणित

प्राथमिक विद्यालय में रेखागणित की शिक्षा मात्र प्रयोगात्मक होगी। दूरियों को नापना और कागज पर रेखाओं के ज़रियः उन्हें जाहिर करना, खेतों का क्षेत्रफल और कमरों या सन्दूकों का आयतन ज्ञात करने में आयत, वर्ग, त्रिभुज, घन आदि बनाना। कुँओं या गोल चीजों को नापने के लिये दायरे खिंचवाना और उन का क्षेत्रफल निकलवाना। प्राथमिक विद्यालय के लिये रेखागणित का इतना ज्ञान काफी होगा। माध्यमिक विद्यालय में जब रेखागणित की शिक्षा प्रारम्भ होगी तो यह प्रारम्भिक परिकल्पनायें मदद देंगी।

ड्राइंग

भाषा की तरह यह भी बच्चे की अभिव्यक्ति का एक साधन है। बच्चे जन्मजात तौर पर इस की तरफ खिंचते हैं। अतः इस की शिक्षा की व्यवस्था पहली कक्षा से होनी चाहिये। ड्राइंग सिखाने का जो तरीका अब चलन में है, अक्सर बच्चों के लिये बेजान और उकता देने वाला साबित होता है। नौ दस साल की उम्र तक ड्राइंग का काम इस सिद्धान्त पर निर्भर होना चाहिये कि बच्चों को अभिव्यक्ति का अवसर मिले। अर्थात वह इसके जरियः उन विचारों और भावनाओं को व्यक्त कर सकें जो किसी चीज या घटना के बारे में रखते हों। हाँ अलबत्ता इस काम में भी शिक्षक को बच्चे के लिये संकेत देने पड़ेंगे और उस का उत्साहवर्धन भी करना होगा। पेशे के काम में वह चीजें इस्तेमाल करता है, अपने आस पास वह जो चीजें और घटनायें देखता है, कहानियाँ जो सुनता है, प्राकृतिक चीजों के सबक जो उसने पढ़े हैं और इतिहास भूगोल में जो बाते उसने सीखी हैं ड्राइंग के लिये आवश्यक विषय वस्तु प्रदान करेंगी।

बड़ी कक्षाओं में भी ड्राइंग में नक्काली के बजाय रचनात्मक पहलू पर बल देना चाहिये। इसे दूसरे विषयों से अधिक सम्पर्क देने का प्रयास करना चाहिये। इतिहास, साहित्य और सांइस के शिक्षण में इस के प्रयोग के काफी अवसर मिलेंगे। उन्हें सही तौर पर इस्तेमाल करना चाहिये **(जारी).....**

❑❑

हरपीज जौस्टर .....

उपचार एवं बचाव : हरपीज जौस्टर के रोगी की साफ सफाई और आराम का विशेष ध्यान रखा जाना चाहिये। सामान्य सम्पकों, होम्योपैथिक चिकित्सक के परामर्शानुसार हरपीज जौस्टर से बचाव के लिये प्रिवैन्टिव औषधियों जैसे हिप्पर सल्फ, रस टाक्सीकोडैन्ड्रान, वैरियोलिनम को चयन कर दिया जाना चाहिये। हरपीज जोस्टर ऐलोपैथिक उपचार के अर्न्तगत प्रभावित क्षेत्र पर आराम के लिये कैलेमाइन लोशन (Calamine lotion) लगाया जाता है और दर्द निवारक (analgesic drugs) व सूजन घटाने वाली दवाऐं (Anti-inflammatory drugs) दी जाती हैं। द्वितीयक संक्रमण (Secondary infections) की संम्भावना होने पर लगाने या खाने हेतु एन्टी बैक्टीरियल ड्रग्स दी जाती है। डिस्सीमिनेटिड हरपीज जौस्टर के उपचार में एन्टी वाइरल ड्रग्स जैसे एसाइक्लोविर को मुख द्वारा दिया जाता है। हरपीज़ जौस्टर का स्वतः ठीक होने वाला अर्थात् सैल्फ लिमिटिंग वाइरल रोग है जिसका उपचार अन्य वाइरल रोगों की ही तरह होम्योपैथिक चिकित्सा पद्धति द्वारा कहीं बेहतर तरीके से किया जा सकता है बस ध्यान देने योग्य बात यह है कि औषधि चयन होम्योपैथ द्वारा रोगी के लक्षणों की सर्म्पूणता के आधार पर किया जाना चाहिये। हरपीज जौस्टर के उपचार कारण्र कुछ प्रमुख होम्योपैथिक औषधियों में मीजेरियम, रस टाक्सीकोडैन्ड्रान, सल्फर, थूजा आक्सीडेन्टेलिस आदि में से लक्षाणों के आधार पर चयनित सिमिलिमम रोगी के लिए अचूक साबित है। तो जनाब अब आप उपरोक्त परिस्थितियों में होम्योपैथी को परखने से चूकेंगे तो नहीं।

डॉ0 जितेन्द्र साधवानी
बी.एस.सी., बी.एच.एम.एस., डी. एन.एच.ई., सी.ए.एफ.ई.

❑❑

पहली क़िस्त

लिखने की कला

शमीम एकबाल खाँ

बहुत दिनों से मैं यह सोच रहा था कि कुछ लिखा करूँ विद्यार्थी जीवन में अक्सर मजबूर किया जाता था कि मैं सुलेख लिखूँ क्योकि मेरी रायटिंग बहुत खराब थी और यही वजह थी कि लोग मेरी रायटिंग सुधारने के लिये सुलेख लिखाया करते थे, लोगों की तमाम कोशिशों के बावजूद मेरी रायटिंग सुधरी तो नहीं बल्कि और भी खराब हो गई पहले दूसरों को ही पढ़ने में परेशानी होती थी अब खुद को भी परेशानी होने लगी, "मर्ज बढ़ता गया ज्यों–ज्यों दवा की" का मुझे उस वक्त हुआ जब मेरे एक रिश्तेदार मेरे यहाँ आये, रात में खाना खाने के बाद उन्होने बताया कि अगले हफ्ते मुझे यहाँ आना था लेकिन कल जब तुम्हारा खत मिला तो मैंने सोचा कि चल कर तुम से मिल ही आऊँ, तुम्हारी खैरियत भी मालूम हो जायेगी और अपना काम भी कर लूँगा क्योंकि तुम्हारा खत मैं ही क्या पूरे मोहल्ले में कोई भी नहीं पढ़ सका, किसी ने मुझे बड़ी नेक सलाह दी अगर डाकिया पता पढ़ सका है तो खत भी जरूर पढ़ लेगा।

मैं दूसरे दिन सुबह डाकिये की तलाश में बड़े डाकखाने पहुंचा तो मालूम हुआ कि एक माह की छुट्टी पर रवाना हो चुका है कोई और डाकिया इसे पढ़ने में कामयाब नहीं हो सका, यह कहते हुये उन्होंने बे पढ़ा खत मेरे सामने बढ़ा दिया पहले तो मैं उसे अपना खत होने से मना किया लेकिन जब उसे पढ़ने की कोशिश में नाकाम रहा तो मानना पड़ा कि अपना ही है, मेरे रिश्तेदार ने कहा अरे साहब बड़े लोगों की रायटिंग ऐसी ही होती है।

उनकी इस बात पर मुझे याद आया कि एक मोहतरमा अपने शौहर जो पेशे से डाक्टर थे, का खत पढ़वाने के लिये केमिस्ट के पास जाती थी (डाक्टर भी तो बड़ा आदमी होता है) बहर हाल उनकी इस बात से थोड़ी तसल्ली हुई और पलंग से उठकर पास में पड़ी कुर्सी पर बैठ गया।

मेरे यह रिश्तेदार मेरे बेतकल्लुफ दोस्त भी हैं, मैने अपने दिल की बात उनसे कह दी, यार मैं कुछ लिखना चाहता हूँ लेकिन न तो मेरी रायटिंग इस लायक है और न ही अपने में कुछ लिखने की सलाहियत है, उन्होंने कहा कि इसमें परेशानी की क्या बात है, रायटिंग का मसला भी हल हो सकता है और सोच कर लिखने की हिमाकत भी नही करनी पड़े गी हाँ यह बात अलग है कि थोड़ा बहुत पढ़ना ज़रूर पड़ेगा, एक टाइप राइटर ले लो रायटिंग का मसला थोडी से प्रेक्टिस के बाद हल हो जायेगा, उन्होंने शरारत भरी मुस्कराहट से कहा मैं तुम्हे एक किस्सा सुनाता हूँ हो सकता है इस तरकीब से तुम्हारी लिखने की तमन्ना पूरी हो जाये, बात जारी रखते हुये उन्होने कहना शुरू किया।

"मेरे एक दोस्त एक अख्बार में एडीटर हैं, एक दिन शाम को मैं उनके दफ्तर पहुंचा तो देखा कि उनकी मेज पर कई अख्बार की कटिंग पड़ी हुई हैं, प्रत्येक में लाल, नीली, हरी लाइनें खिची हुई हैं और वह अखबार के इन टुकडों को एक सादें कागज पर गोन्द की मदद से चिपका रहे थे, मैंने उनसे कहा यार मैं तुम्हें सम्पादक समझ रहा था लेकिन तुम तो दफ्तरी निकले, उन्होंने मुस्करा कर कहा कल के अख्बार के लिये एडीटोरियल लिख रहा हूँ, मैंने पूछा भाई इस चिपकावट को लिखावट का नाम क्यों दे रहे हो उन्हो ने बात को खत्म करने के लिये हंस कर कहा अरे यार सब चलता है मुझे भी जल्दी थी लिहाजा ज्यादा कुरेदना मुनासिब नहीं समझा।"

मैने उनसे कहा तुम्हारा मतलब है कि मैं भी अपने लिखने वाली तमन्ना को 'चिपकावट' से पूरी कर सकता हूँ, उन्होंने अपना सर ऊपर–नीची की ओर हिलाते हुये कहा– लोग मिलावट के इतने आदी हो चुके हैं कि अगर उन्हें खालिस चीज मिल जाये तो वे उसे हजम नहीं कर पाते इसी बात पर एक किस्सा और सुन लो–

लखनऊ में विक्रम टैम्पों की भरमार से कौन वाकिफ न होगा, कुछ दिनों से एक भीड़–भाड़ वाली सड़क पर इसका चलना बन्द कर दिया गया और उनकी जगह बसों ने ले ली। आफिस का आना जाना स्कूटर से होता था जिस से मेरे सीने में तक्लीफ होने लगी, डाक्टर से जांच कराई लेकिन मसला नहीं हल हो सका, इसके बाद में मैं एक सायकालोजिस्ट से मिला और अपनी व्यथा सुनाई उन्होंने मुझ से कई सवालात किये जिनका मैं जवाब देता रहा, आखिर में उन्होंने जो नतीजा निकाला और मशविरा दिया वह कुछ इस प्रकार था–

''चूँकि मेरे आफिस और घर के रास्ते में टैम्पू की वजह से बहुत ज्यादह प्रदूषण रहता था, जिसपर बरसों चलता रहा हूँ और मेरे फेफड़े उस प्रदूषित वायु के आदी हो गये थे जिसमें आक्सीजन की मात्रा बहुत कम रहती थी लेकिन अब टैम्पू के बन्द हो जाने की वजह से वायु में आक्सीजन की मात्रा बढ़ गई जो मेरे को रास नहीं आ रही है लिहाजा मैं घर से आफिस आते जाते दोनों वक्त उस जगह पर 10–15 मिनट के लिये रूकूँ जहाँ पर टैम्पू आते जाते हों, कुछ दिनों के बाद एक वक्त फिर एक दिन छोड़ कर।

मनोंवैाानिक महोदय का सुझाव माना और उस पर अमल शुरू किया, कुछ ही दिनों में अपने को टैम्पू के धुवें के बजाये बसों के धुवें का आदी बना लिया जाहिर है बसों की तादाद टैम्पू की बनिस्बत बहुत कम है।''

अब अगर तुम चिपकावट की मदद से अपनी इच्छा पूरी कर सकते हो तो शौक से पूरी करो किसी को खांसी नहीं आयेगी, अगर तुम लिखने के मामले में संजीदा हो तो लिखने के कुछ मूल सिद्धान्त बताता हूँ–

अपने विचारों को लेख के रूप में प्रस्तुत करने की एक कला है और यह कला कभी भी सीखी जा सकती है, लगभग सभी इन्सान की ख्वाहिश होती है कि उसे अच्छा खाना मिले उसी तरह से दिलचस्प लेख भी पसन्द किये जाते हैं। अच्छा लेखक एक दम से कोई नहीं बन पाता, यह स्थान उसे सालों की मेहनत के बाद मिलता है।

प्रत्येक स्त्री या पुरुष कुछ न कुछ लिखता रहता है, यह इस बात पर निर्भर करता है कि वह क्या करता है, यदि कोई विद्यार्थी है तो उसका लेखन कार्य अलग तरह का होगा। गृहस्त स्त्री धोबी, दूध आदि का हिसाब लिखे गी, व्यापारी का अलग प्रकार का लेखन होता है। कार्यालयों के पत्र अलग प्रकार के होते हैं, व्यवहारिक रुप में होता यह है कि पत्रों को सरसरी तरीके से पढ़ लिया जाता है और कहीं डाल दिया जाता है भले ही पत्र टाइप किये हुये हों या कम्प्यूटर द्वारा आकर्षक तरीके से छापे गये हों, इसके अतिरिक्त बहुत सी पाठ्य सामग्री के रुप में अखबार पत्रिकायें आदि भी प्रतिदिन पढ़ने को मिलते हैं, उनके साथ भी यही हाल होता है।

जो भी रचना हो, आकर्षक होनी चाहिये और पढ़ने वाला वही पढ़े जो लिखा गया हो साथ ही शुरु से लेकर आखिर तक पढ़ने वाले को लेख में दिलचस्पी बनी रहे, प्रभावशाली एवं दिलचस्प लेख लिखने के लिये एक तो अभ्यास की आवश्यकता है तथा कुशलता प्राप्त करने के लिये कुछ विशेष बातों को सीखने की आवश्यकता है जिनका वर्णन कुछ इस तरह है–

लेख का संक्षिप्त होना

एक अंग्रेजी लेखक का कहना है "That writer does most, who gives the reader **most** information, and take from him **least** time."

किसी भी लेख की अच्छाई और प्रभावशाली होने का सुबूत यही है कि लिखने वाले ने एक तरफ इस बात का ख्याल रखा है कि उसने कितनी अधिक से अधिक सुचना अपने पढ़ने वाले के लिये उपलब्ध करायी है और दूसरी ओर इस बात का भी ख्याल रखा गया है कि पढ़ने वाला कितने कम समय में उसे पढ़ लेता है।

यही विचार प्रत्येक लेख, चाहे वह व्यक्तिगत हो या शासकीय पत्र हो या कोई रिपोर्ट हो सभी में इस बात का ख्याल रखा जाना चाहिये कि पढ़ने वाला पढ़ते पढ़ते ऊब न जाये और अगर पढ़ भी ले तो लेख का सर–पैर का ही पता न चले।

लेख का स्पष्ट होना

जहाँ इस बात का ध्यान रखना

है कि लेख इस हदतक बड़ा न हो कि जी ऊब जाये वहीं इस बात का भी ध्यान रखना है कि जो बात आप कहना चाहते हैं वह स्पष्ट हो रही है। जिस बात का विस्तृत होना आवश्यक है उसी में कांट–छांट न कर दी जाये। उदाहरण के लिये आप के यहाँ हाथ के बुने स्वेटर का उद्योग होता है। किसी ग्रहक ने आप को पत्रलिख कर स्वेटर बनाने की फरमाइश की जिसमें उसने ऊन की क्वालिटी, रंग, स्वेटर की डिजाइन सभी कुछ लिख दिया परन्तु स्वेटर का साइज नहीं लिखा अब आप किसके लिये स्वेटर बुनवायेंगे, किसी महिला के लिये पुरुष के लिये अथवा किसी बच्चे के लिये। जो बात आवश्यक थी वही दबा ली गई। इस पत्र में यदि स्वेटर की नाप लिख दी जाती तो पत्र लिखना सार्थक था।

पाठक कोई जादूगर नहीं होता कि लेखक के मन की बात लेख को पढ़कर समझ ले। अगर कथानक को स्पष्ट नहीं किया गया है तो उसे लेख की श्रेणी में नहीं रखा जा सकता।

किसी भी लेख के लिये स्पष्टता, शुद्धता तथा संक्षिप्तता बहुत ही आवश्यक होती है। इन बातों का ध्यान रखने पर लेख को प्रभावशाली बनाया जा सकता है। वातावरण तथा मानसिक दबाव का भी बड़ा असर रहता है। उदाहरण के लिये किसी फर्म के मैनेजर को नाराजगी भरा एक पत्र लिखा कि मेरे आर्डर पर जो मसहरी उन्होने भेजी है वह केवल तीन टांगों की है इसी समय नाराजगी वाले पत्र तो और लिखे जा सकते हैं परन्तु किसी रिश्तेदार अथवा दोस्त को दोस्ताना माहौल का पत्र उस समय तक न लिखें तबतक आप का स्वभाव सामान्य न हो जाये।

मिर्जा असद उल्लाह खाँ ग़ालिब का व्यक्तित्व किसी परिचय का मोहताज नहीं है। चचा ग़ालिब अपनी शायरी के लिये जितने मशहूर हैं उतना ही अपने पत्रों के लिये भी मशहूर हैं। उनके पत्रों में यह खूबी थी कि पत्र पढ़ने से लगता था कि वे सामने बैठे हैं और खुद बोल रहे हैं।

हर पढ़ा लिखा आदमी अपने रिश्तेदारों को, दोस्तों को खत लिखता है जो कभी व्यवहारिक होते हैं और कभी किसी आवश्यकता की पूर्ति के लिये लिखे जाते हैं यह पत्र इस प्रकार के नहीं होते हैं जिन्हे एक बार से अधिक पढ़ा जाये। लेकिन कुछ लिखने के लिये कोशिश यही होनी चाहिये कि शैली ऐसी न हो कि पढ़ने वाला उसे आधा–तिहा पढ़कर फेंक दे बल्कि उसे लगे कि वह पत्र या लेख नहीं पढ़ रहा है वरन् लिखने वाले से बाते कर रहा है। एक मशहूर निबन्धकार विलियम हैजलिट ने भी लगभग डेढ़ सौ वर्ष पूर्व यही बात कही "to write as anyone would speak in common conversation"

छोटे–छोटे वाक्य, आम तौर से बोले जाने वाले शब्दों का प्रयोग आपके लेख को आकर्षक बना सकते हैं। साहित्यिक क्लिष्ट शब्दों के प्रयोग से ग्रन्थ रचकर पुस्तकालयों की रौनक को बढ़ा सकते हैं **परन्तु प्रेमचन्द्र की कहानियों** के रूप में जन–जन तक नहीं पहुंच सकते।

रुचिकर एवं स्पष्टता–

जब भी कुछ लिखा जाये तो एकाग्र मन से लिखा जाये। वाक्य एवं स्पष्ट होने चाहिये। बहुत घुमाव–फिराव की बातें न लिखी जायें अन्यथा लेख को प्रभावशाली नहीं बनाया जा सकता है जैसे एक वाक्य है–

"आज सुबह से ही मूसलाधार बारशि हो रही थी इस लिये अकबर स्कूल नहीं गया"

इस वाक्य हो संक्षेप करके भी लिखा जा सकता था–

"तेज बारिश की वजह से अकबर स्कूल नही गया"

निरन्तर अभ्यास से काम में निखार पैदा होता है। मैंने बायें हाथ से लिखने का अभ्यास शुरू किया परिणाम स्वरूप अब दोनों हाथों से कुशलता से लिख सकता हूँ।

लेख सम्बन्धी कुछ मन्त्र–

किसी भी प्रकार के लेख के लिये तीन बातें आवश्यक होती है।

1. शुद्धता
2. संक्षिप्तता
3. स्पष्टता

1. शुद्धता

किसी भी पत्र अथवा लेख के लिये भाषा की शुद्धता भी आवश्यक है। लेख का पढ़ने वाला सम्भवतः लिखने वाले को न जानता हो किन परिस्थितियों में लेख लिखा गया, पाठक इससे भी अनभिज्ञ होता है। अतः आवश्यक होता है कि लेख की भाषा की शुद्धता एवं स्पष्टता के आधार पर ही लिखा जाये ताकि पढ़ने वाला लिखने वाले की भावनाओं तथा विचारों को स्पष्ट रूप से समझ सके।

यह बात अपनी जगह बिल्कुल सही है कि हिन्दी भाषा से आसान अन्य कोई भाषा नहीं है इस लिपि में जो लिखा जायेगा वही पढ़ा जायेगा जब कि अंग्रेजी भाषा में ऐसा नहीं हे वहाँ लिखा जाता है 'कनऊ–लद–गे' लेकिन पढ़ा जाता है 'नालेज' (~~झवबूसमकहम~~)। KNOWLEDGE

इस कम्प्यूटर के युग में, मैं शुद्धता के दृष्टकोण से उन सब को जो संज्ञा की श्रेणी में आते हैं उन्हें कोई सूक्ष्म नाम जिन्हे कोड कहा जाता है, आवण्टित कर दिया जाता अतः व्यक्ति अथवा वस्तु को इन्ही कोड की सहायता से पहचाना जाता है। जैसा कि पुलिस विभाग में सभी कर्मियों को व्यक्तिगत नम्बर आवण्टित कर दिया गया है जो इसी नम्बर से पहचाना जायेगा। यदि नम्बर लिखते समय शुद्धता का ध्यान नहीं रखा गया तो विवरण वास्तविकता पर आधारित नहीं होगा। ऐसी ही परिस्थिति में महात्मा गांधी से सम्बन्धित सूचना मागने पर चंगेज खाँ के बारे में सूचना प्राप्त होगी और कह दिया जायेगा कि कम्प्यूटर गलत बताता है।

2. संक्षिप्तता–

यदि किसी व्यक्ति को एक–दो पृष्ठों का पत्र आपने लिखा तो यह आवश्यक नहीं है कि आप का पत्र मिलते ही वह पढ़ने को बैठ जाये। हो सकता है अपनी व्यस्तता के कारण पत्र को उस समय वह रख दे कि बाद में पढ़ूँगा परन्तु बाद में वह पढ़ना भूल ही जाये। आप खत लिख कर उसके उत्तर की प्रतीक्षा करने लगे और वहाँ यह हाल कि पत्र पढ़ा तक नहीं गया। अब आप किसको दोषी ठहरायेंगे, जिसको आप ने पत्र लिखा उसे या अपने आप को जिसने इतना लम्बा–चौड़ा पत्र लिखा, यदि पत्र संक्षिप्त होता तो तत्काल पढ़ लिया जाता।

कोई भी पत्र लिखने से पूर्व विचार कर लिया जाना चाहिये कि पत्र लिखने की आवश्यकता को कितने कम से कम शब्दों में व्यक्त की जा सकती है। पत्र जितना संक्षिप्त होगा। उसके पढ़े जाने की सम्भावना उतनी ही प्रबल होगी।

3. स्पष्टता–

यदि शुद्धता तथा संक्षिप्तता पर ध्यान रखा गया है तो स्पष्टता भी आ जायेगी। यहाँ पर कुछ अतिरिक्त सुझाओं का वर्णन किया जा रहा है जिनसे लेखन कार्य आसान और लेख स्पष्ट हो जायेगा।

पूरा लेख अनुच्छेदों (पैराग्राफों) पर आधारित होना चाहिये। प्रत्येक अनुच्छेद छोटे होने चाहिये। छोटे अनुच्छेदों से लेख सुन्दर लगता है तथा पाठक की रुचि को बढ़ाता है, यदि लेख कम्प्यूटर अथवा टाइपराइटर द्वारा छापा जाना है तो प्रत्येक अनुच्छेद की लाइनों की संख्या दस से अधिक न होनी चाहिये। यदि लेख हाथ से लिखा गया है तो प्रत्येक अनुच्छेद पांच अथवा छः लाइनों का ही होना चाहिये। शब्द आसान तथा वाक्य छोटे होने चाहियें। अपनी काबलियत का बखान करने के लिये मोटे–मोटे कठिन शब्दों के प्रयोग से बचना चाहिये।

शब्द–शुद्धि

हिन्दी भाषा अन्य भाषाओं की अपेक्षा बहुत ही आसान है पर एक दुःख की बात यह है कि हिन्दी बोलने वालों का उच्चारण गलत होता है हमारे एक मित्र हैं वह अपना नाम 'रामेसुअर प्रसाद' ही बोलते हैं अपनी शैक्षिक योग्यता भी कभी सही नहीं बता पाये, एम.ए.एल.एल.बी. को यम. ये. यल.यल.बी. ही कहते है।

प्रायः लोग 'व' और 'ब' में भी फ़र्क़ नहीं कर पाते, 'वर्तमान' को 'बर्तमान' लिखते और बोलते हैं। लिंग भेद में भी अशुद्धियाँ रहती है, 'माता जी आ रही है' के स्थान पर 'माता जी आ रहे हैं' बोलेंगे। (जारी)

सुल्तान सलाहुद्दीन अय्यूबी

इरशाद अली खाँ

सुल्तान सलाहुद्दीन अय्यूबी के पिता का नाम नजमुद्दीन अय्यूब था। वह पहले तिकरीत फिर दमिश्क़ के गवर्नर हुए। सलाहुद्दीन अय्यूबी का जन्म सन् 1137 ई0 में इराक के तिकरीत नामक स्थान पर हुआ, जो कुर्द नस्ल से थे। उनके चचा का नाम अस्दुद्दीन शेरकोह था। सुल्तान नूरुद्दीन ज़ंगी ने उनके पिता नजमुद्दीन अय्यूब को दमिश्क का गवर्नर तथा चचा अस्दुद्दीन शेरकोह को अपनी सेना का सेनापति नियुक्त किया था। सुल्तान सलाहुद्दीन ने अपने चचा से फौजी तर्बियत हासिल की। तलवारबाजी, नेज़हबाजी और तीर चलाने में बहुत निपुण थे। इसके अतिरिक्त उनमें शासन प्रबंध चलाने की योग्यता भी थी। उनके चचा उन्हें सदैव अपने साथ रखते थे और उनकी राय के बिना कोई काम न करते।

अस्दुद्दीन शेरकोह वर्षों से मिस्र पर शासन करने की योजना बना रहा था। वह तीन बार शाम से मिस्र आया, और हर बार सफल रहा। अंत में वह मिस्र का शासक बन गया। मगर मिस्र पर वह केवल 64 दिन ही शासन कर सका और इन्हीं दिनों में उसकी मृत्यु हो गयी। इतिहासकार लिखते हैं कि वह बहुत खाना खाता था, जिसकी वजह से वह कई बार पेट की बीमारी से ग्रस्त रहा। ठीक होने के बाद भी खाने में कोई कमी न आयी। अन्तिम बार पेट की बीमारी के कारण उसके हलक़ में सूजन हुई और 23 मार्च सन् 1169 ई0 में उसकी मृत्यु हुई। शेरकोह की मृत्यु के बाद शेरकोह के सेनापति और मिस्र के प्रभावशाली राज–दरबारियों और मंत्रियों ने सलाहुद्दीन अय्यूबी को मिस्र का शासक बनाने का निर्णय लिया। फ़ातिमी ख़लीफ़ा आज़िद बिल्लाह ने उसे मिस्र का शासक स्वीकार कर लिया। यह घटना सन् 1169 ई0 की है, जब सलाहुद्दीन की आयु 32 वर्ष थी।

मिस्र का शासक बनने के बाद सुल्तान सलाहुद्दीन अय्यूबी ने राज्य के शासन प्रबंध की तरफ़ पूरा ध्यान दिया। साथ ही न्याय प्रक्रिया को हर काम पर सर्वोपरि रखा। सेना प्रबंध को मजबूत बनाया और सेना की संख्या में बढ़ोत्तरी की। मिस्र एक अर्से से षड़यंत्रों और बगावतों का शिकार था। सलाहुद्दीन अय्यूबी ने इस तरफ विशेष ध्यान दिया, तिसके कारण बहुत जल्दी ही मिस्र में शान्ति व्यवस्था स्थापित हो गयी। उस जमाने में न केवल बैतुल मकदिस ही ईसाइयों के अधिकार में था, बल्कि समुद्री क्षेत्रें पर और विशेष रूप से मिस्र से हिजाज जाने वाले राजमार्ग पर ईसाई शासकों का अधिकार था। अक्सर ईसाई, मुसलमान काफिलों को लूट लेते थे। सलाहुद्दीन अय्यूबी ने उन समुद्री इलाकों को अपने अधीन करने की योजना बनायी। बहाउद्दीन के कथनानुसार जो उसकी सेना का काजी और सलाहकार था, "सुल्तान सलाहुद्दीन ने मुझ से कहा था कि इन साहिली इलाकों को विजय करने का ख्याल अल्लाह तआला ने मेरे दिल में डाला।"

ज्यों ही मिस्र पर उसकी पकड़ मजबूत हुई, उसने अपनी सेना उन साहिली इलाकों में भेजी, जिन इलाकों पर ईसाइयों का अधिकार था। सेना ने उन साहिली इलाकों के छोटे–छोटे किलों पर अपना अधिकार कर लिया। उसके बाद से उसके जेहन में यह बात बैठ गयी थी कि जब तक ईसाई बैतुल मकदिस और सीरिया के साहिली इलाकों पर काबिज हैं, वे मुसलमानों और मुस्लिम शासन के लिए खतरा बने रहेंगें। मगर ईसाइयों के अधिकार से उन इलाकों का आजाद कराना बहुत मुश्किल काम था, इसलिए मुस्लिम शासकों में एकजुटता बहुत जरूरी थी।

जब ईसाई शासकों ने देखा कि सुल्तान सलाहुद्दीन अय्यूबी बहुत कम समय में मिस्र में अपनी हुकूमत मजबूत कर ली है, तो उन्हें बहुत फिक्र हुई, उन्होंने खतरे का अनुभव किया कि कहीं सलाहुद्दीन उनके इलाकों पर आक्रमण करके अपने अधीन न कर ले। शाम और फिलिस्तीन के ईसाइयों को यूनान के लोगों की जबरदस्त

सहानुभूति प्राप्त थी। यूनानी शासक मैनिवल कमनीनोस तो एक अरसे से मिस्र पर आक्रमण करके उसे अपने अधीन करने की योजना बना रहा था। जब उसके भाई के पोती की शादी शाह अलमरीक से हुई, जो बैतुल मकदिस का शासक था, तो यह प्रयत्न और तेज हो गया। मिस्र के आसपास के सारे ईसाई शासकों ने यूनानियों के साथ मिलकर मिस्र पर आक्रमण कर दिया और दमियात को अपना निशाना बनाया सुल्तान सलाहुद्दीन अय्यूबी ने अंदाजा कर लिया कि ईसाई दमियात पर अपना अधिकार करने के लिए पूरी शक्ति लगा देंगे, इसलिए उसने दमियात के किले में मौजूद सेना को हर तरह का जंगी सामान फराहम किया, तथा खाने–पीने का सामान भी भेज दिया और उनसे वादा किया कि उनकी सहायता के लिए और सेना भेज दी जाएगी, ताकि वे ईसाइयों के आक्रमण को रोक सकें।

ईसाइयों ने जोरदार आक्रमण किया। दूसरी ओर सुल्तान सलाहुद्दीन अपने तेज रफ्तार सवारों के साथ उन पर टूट पड़ा। इतना भयंकर आक्रमण किया कि ईसाई सेना के हौसले पस्त हो गये और उन्होंने महसूस किया कि उनकी योजना असफल हो गयी। वे अपनी जान बचाने के लिए पीछे भागे और अल्लाह ने मुसलमानों को विजय दी।

सुल्तान नूरुद्दीन ज़ंगी की मृत्यु के बाद उसका कमसिन बेटा मलिक सालेह सीरिया का शासक बना। उस समय सालेह की आयु 12 वर्ष थी। उसका रक्षक गुमश्तगीन जो हल्ब का गवर्नर था, दमिश्क आकर नवउम्र शासक सालेह के अधिकार का उपयोग मनमाने तरीके से करने लगा। उस जमाने में दमिश्क का गवर्नर शमसुद्दीन था, मगर वह किला में रहता था। किले के बाहर उसका आदेश न चलता था, इसलिए दमिश्क के गवर्नर शमसुद्दीन ने सलाहुद्दीन को खत लिखा कि वह सीरिया आकर यहां के हालात को सुधारे, ताकि ईसाई इसका फायदा न उठा सकें। खत मिलने के बाद सलाहुद्दीन अय्यूबी ने शाम की तरफ कूच करने की तैयारी की।

सुल्तान सलाहुद्दीन अय्यूबी मिस्र से दमिश्क 27 नवम्बर सन् 1174 ई0 को पहुंचा। मलिक सालेह जो शाम का शासक था। जब उसे खबर मिली कि हल्ब पर शमसुद्दीन ने अपना अधिकार कर लिया है, तो उसे आजाद कराने के लिए सालेह हल्ब गया हुआ था और उसकी गैर मौजूदगी में जब सलाहूद्दीन दमिश्क चहुंचा, तो वहां के नागरिकों ने उसका गर्मजोशी से स्वागत किया। यहां तक कि किले के दरवाजे खोल दिये। वहां पर शान्ति व्यवस्था स्थापित करने के बाद वह हल्ब की तरफ रवाना हुआ और हमस पर अपना अधिकार कर लिया। नूरुद्दीन जंगी के भतीजे सैफुद्दीन और अजीदुद्दीन दोनों ने सलाहुद्दीन की आमद को अपने लिए खतरा समझा। दोनों ने सलाहुद्दीन के मुकाबले के लिए एक बड़ी सेना तैयार की। इस खबर के मिलते ही सलाहुद्दीन हमस की ओर लौट पड़ा और हमस पहुंच कर वहां के किले को घेर लिया और बड़ी आसानी से किले पर कब्जा कर लिया।

सुल्तान सलाहुद्दीन अय्यूबी की सेना सैफुद्दीन ज़ंगी और सालेह ज़ंगी की सेना से कम थी। सलाहुद्दीन अय्यूबी मिस्र से सहायक सेना का इन्तिजार कर रहा था। सलाहुद्दीन की सेना जब लड़ाई के लिए तैयार हो गयी, तो दोनों सेनाओं का मुकाबला 571 हिजरी को हुआ। जंग के दौरान सैफुद्दीन ज़ंगी के एक सेनापति मुज़फ्फ़रुद्दीन ने सलाहुद्दीन के बाएं बाजू को पीछे ढकेल दिया। यह देखकर सलाहुद्दीन ने जबरदस्त आक्रमण किया और विरोधी सेना को पीछे हटना पड़ा। उसके बाद अजाज के किले का घेराव किया और किले पर अधिकार कर लिया। उसके बाद हल्ब के सामने अपना खेमा डाला। कुछ अरसे बाद नुरुद्दीन जंगी की कमसिन बेटी उससे मिलने आयी और किला अजाज को तोहफे में देने की प्रार्थना की। सुल्तान सलाहुद्दीन ने वह किला तोहफे में दे दिया।

सुल्तान सलाहुद्दीन का खास मकसद बैतुल मकदिस को आजाद कराना था। अस्कलान की विजय के बाद अस्कलान के आसपास के छोटे–छोटे किलों को सलाहुद्दीन ने आसानी से अधिकार में कर लिया। अब सुल्तान सलाहुद्दीन को विश्वास हो गया कि उसकी दिली मुराद पूरी होने वाली है। बैतुल मकदिस की फतह में अल्लाह उसकी मदद फरमाएगा।

20 सितम्बर 1187 ई0 में सुल्तान सलाहुद्दीन अय्यूबी अपने तेज रफ़्तार सेना को लेकर बैतुल मकदिस के पश्चिम में पड़ाव डाल दिया। उस समय उसकी सेना की संख्या 60 हजार थी। पश्चिम की ओर से जब फसील को तोड़ना मुश्किल हो गया तो उसने पूर्व की ओर से फसील तोड़ने वाले दस्ते को नियुक्त किया। फसील के रक्षक सलाहुद्दीन के तीर अंदाजों का सामना न कर सके। ज्यों ही फसील के रक्षक कमजोर पड़ गये, सलाहुद्दीन के सेंध लगाने वाले सैनिकों को अवसर मिल गया, उन्होंने बारूद से फसील की दीवार की बुनियाद को उखाड़ दिया। (यह जगह वादी जहन्नम कहलाती है) उसमें इतना बड़ा सुराख हो गया कि उसमें से होकर मुसलमान शहर में प्रवेश कर सकते थे।

सलाहुद्दीन की लगातार सफलता और शहर की घेराबंदी तथा फसील को टूटने से ईसाइयों के हौसले पस्त हो गये। उन्हें मालूम था कि 8 वर्ष पहले जब ईसाइयों ने बैतुल मकदिस पर कब्जा किया था, तो शहर की गलियां मुसलमानों के खून से भर गयी थीं, उन्हें यकीन हो गया कि मुसलमान भी वैसा ही करेंगे। फसील टूटने के बाद जब मुसलमान अन्दर जाने लगे, तो ईसाइयों को अचानक जोश आया और उन्होंने मुसलमान फौजियों को पीछे हटने पर विवश कर दिया और सुल्तान के पास एक संदेश भिजवाया।

"बैतुल मकदिस के रहने वालों ने यह तय कर लिया है कि वे घोड़े और जानवरों को जिब्ह कर देंगे, सारे फरनीचर को तोड़ कर गिरजाघरों में डाल देंगे, फिर उसमें आग लगा देंगे, औरतों और बच्चों को मार कर बूढ़े और जवान एक साथ निकलकर मौत का सामना करेंगे।"

सुल्तान ने उस संदेश को बड़े सुकून से पढ़कर बैतुल मकदिस के सबसे बड़े पादी हिराकली को बताया कि, "शहर की बर्बादी और शहर वालों का कत्ल उसका उद्देश्य नहीं है।" अच्छा तो यह है कि शहर को मुसलमानों के हवाले कर दिया जाए। अंत में तय हुआ कि शहर मुसलमानों के हवाले कर दिया जाए। अलबत्ता हर मर्द को 10 दीनार, औरत को 5 दीनार और बच्चे को एक दीनार का फिद्या देना होगा। ईसाइयों को जान की अमान दी जाएगी, और वह अपने सामान के साथ मुसलमान फौजियों की हिफाजत में ईसाई पनाहगाह में चले जाएंगे।

ईसाइयों ने फिद्या देकर शहर खाली कर दिया। 2 अक्तूबर सन् 1187 ई0 को बैतुल मकदिस पर मुसलमानों का अधिकार हो गया। अर्थात बैतुल मकदिस को मुसलमानों ने आजाद करा लिया। सुल्तान सलाहुद्दीन अय्यूबी और मुसलमान फौजियों की आंखों से खुशी के आंसू बह रहे थे। मस्जिदे अक्सा की सफाई हुई । सुल्तान नूरुद्दीन जंगी ने एक मकबरा बनवाया था कि जब भी मस्जिदे अक्सा पर मुसलमान कब्जा करेंगे, तो उसे वहां नस्ब किया जाए। उसकी तमन्ना उसकी मृत्यु के 13 वर्ष बाद पूरी हुई।

सुल्तान सलाहुद्दीन अय्यूबी को उसके जीवन का उद्देश्य प्राप्त हुआ। उसने अल्लाह तआला का शुक्र मस्जिदे अक्सा में सजदारेज होकर अदा किया।

❑❑

सोया तू कहां है?

उठ हक़ के ऐ हामी
मुस्लिम तू कहां है?
ग़फ़लत से तेरी सुन ले
बिगड़ा ये जहां है।
दौलत जो इक निअ़मत थी
ज़हमत वो बनी है
और इल्म की दौलत की
क़ुदरत से ठनी है
पेशानी मुह़क़्क़िक़ की
क़ब्रों पे झुकी है
और अ़क़्ल मुहन्दिस की
टी वी में लगी है
बे पर्दगी तो आ़म है
और ज़ब्ते विलादत है
है रक़्स अब नादी में
ये कैसी ह़िमाकत है
एम काम की डिग्री है
और सूद की लअ़नत है
माहिर हैं तबाबत में
पैसों की बस ह़ाजत है
उठ हक़ के ऐ हामी
मुस्लिम तू कहां है
इक शोर है आ़लम में
सोया तू कहां है?

❍❍

किस्त 11

हिन्दी लिपि में उर्दू शब्दों का उच्चारण तथा अर्थ

– इदारा

नोट : बिन्दी वाले अक्षरों के उच्चारण स्थान, उर्दू वालों से सीखना आवश्यक है।

शब्द	अर्थ	शब्द	अर्थ	शब्द	अर्थ
तवक्कुल	भरोसा	तेग़	तरवार	जाबिर	अत्याचारी
तवल्लुद	जन्म	तीमारदारी	रोगी की सेवा	जाबिर	शक्तिशाली
तौलियत	अधिकार	साबित	सिद्ध	जादः	पथ
तौलीद	प्रजनन	साबित	स्थिर	जाज़िब	शोषक पत्र
तवह्हुम	भ्रम	सालिस	मध्यस्थ	जाज़िब	आकर्षक
तौहीन	अपमान	सालिस	तृतीय	जाज़िब नज़र	दृष्टा कर्षक
तहख़ाना	तलगृह	सालिसी	मध्यस्था	जारोब	कोचिका
तहदीद	ताड़ना	सानी	द्वितीय	जारी	चालित
तहज़ीब	सभ्यता	सानवी	द्वितियक	जासूस	गुप्तचर
तहल्का	कोलाहल	सबात	स्थिरता	जागुज़ीं	आसीन
तुमहत	दोषारोपण	सब्त	अंकित	जागीर	सम्पत्ति
तहनियत	बधाई	सुबूत	प्रमांण	जागीर दार	भूस्वामी
तहनियत नामः	बधाई पत्र	सरवत	वैभव	जाम	मदिरा पात्र
तहोबाला	उथल पथल	सक़ाफ़त	नागरिकता	जामिद	निश्चल
तहव्वुर	वीरता	सक़ाफ़त	संस्कृति	जामिअ	सग्रंह कर्त्ता
तिही	रहित	सक़ालत	भार	जामिअ	व्यापी
तिही दस्त	निर्धन	सिक़ः	विश्वास पात्र	जामिअः	विश्वविद्यालय
तीर	वाण	सम्रः	फल	जामिअीयत	व्यापकता
तीरगी	अंधकार	सना	सराहना	जामः	वस्त्र
तीरः	अंधकार मय	सवाब	प्रतिदान	जान	प्राण

पाठक जिस उर्दू शब्द का अर्थ जानना चाहेंगे अर्थ सहित छापा जायेगा।

आख़िर कुरआन क्यों न पढ़ें?

विशेश्वर सांकृत्यायन

विश्व की वर्तमान प्रगति, भारत का तेज बदलाव, नवीन परम्पराओं का निर्माण, पुरानी परम्पराओं का क्षय, इतनी तीव्र गति से हो रहा है कि नियम और आदर्श तथा जीवन के मूल्यों के विषय में जो संदेह, भ्रम और चक्र आज महसूस हो रहे हैं, वे प्राचीन काल से आज तक कभी सुनने, पढ़ने में नहीं आये। अर्जुन के संदेह तो आज अत्यंत ही छोटे पड़ गये हैं तथा अर्जुन के संशय व भ्रम स्पष्ट और सीधे लगते हैं आज के इन्सान को। अर्जुन के सामने दो ही विकल्प थे–या तो खून–खराबा छोड़ कर शान्ति से कौरवों के साथ संगति बैठाकर उनके शासन में अमीर–उमरा बनकर रहते या भयंकर विनाश का रास्ता अपनाते। उन्होंने विनाश का रास्ता अपनाया। आज का आदमी इस निर्णय के लिए अर्जुन की स्थिति में शायद ही आता है।

इसी प्रकार आज के प्रतिदिन सिकुड़ते संसार के सामने मूल्य और आदर्श का जो गहरा संकट है उसे सकारात्मक नजर वाले ज्ञानीजन इस दृष्टि से देख रहे हैं कि एक पूरी ग्लोबल, साझा संस्कृति उभर रही है। देश–विदेश आवागमन, इम्पोर्ट–एक्सपोर्ट की बहुतायत, इंटरनेट, कंप्यूटर फिल्में व अन्य मीडिया के कारण एक–दूसरे के विचार व आदर्शों का जबरदस्त सामना और सम्मिलन हो रहा है। स्पष्ट है कि एक विश्व संस्कृति, समन्वय पूर्ण मानवीय सभ्यता धीर–धीरे उभर रही है। ऐसे में अपने–अपने घेरों और मंडलों में बंद रहने से बात बनेगी ही नहीं। सब दिशाओं में स्वयं को मुक्त अवकाश देना ही आज के ज्ञानी व्यक्ति को शोभा देता है।

आप आर्य हैं तो आर्य केसारे लक्षण हजरत मुहम्मद साहब में आपको क्यों दृष्टिगत नहीं होते। वीर, साहसी, परिपूर्ण समर्पित ईश्वर भक्त व विश्वासी, लोभ–ईर्ष्या व मत्सर से हीन, दयालु एवं समनिवत स्वभाव के व्यक्ति, जनता के लिए स्वयं को समर्पित करने वाले–आदि–आदि गुणों से सम्पन्न हजरत को आप ईशदूत क्यों न मानेंगे? उनकी 12 पत्नियों थीं तो दशरथ के कितनी थीं? श्रीकृष्ण के कितनी थीं? भारतीय हिन्दू, जैन राजाओं के कितनी–कितनी पत्नियां व रखैलें होती थीं। जरा श्रीमद्भागवत पढ़ो, पूराण पढ़ो, जैन ग्रंथ पढ़ो, जैन पुराणगाथाएं छानों। अनेक पत्नी होना कभी भी उस काल में बुरा नहीं था तो हजरत मुहम्मद साहब पर आक्षेप क्यों लगाते हो? कृष्ण की सोलह हजार लिखी है पत्नियां। तो इतनी न भी मानो तो सोलह तो होंगी ही। बात काटी तो बतंगड़ बनता है बात ही न होगी तो बतंगड़ कहां से बनेगा। इतनी पत्नी होना गौरव की बात थी किसी काल में। किन्तु इतनी पत्नी होने पर भी श्रीकृष्ण अवतार हैं, योगेश्वर हैं, ज्ञानी पुरुष हैं और अनेकों की दृष्टि में भगवान हैं।

दृष्टि में वर्ण, रंग, पूर्वाग्रह जेकर तो ज्ञान संचय नहीं किया जा सकता। जरा कुरआन शरीफ को भी एक श्रद्धा और उच्च दृष्टि से पढ़कर तो देखें। उपेक्षा और तिरस्कार तथा पूर्व कल्पना के आधार पर पढ़ना तो न पढ़ने से भी गर्हित है, बुरा है। अतः पढ़ें तो आदर–सम्मान के साथ पढ़ें और देखें कि कितनी बातें उसकी आपको स्वीकार्य होती हैं। जो स्वीकार नहीं हाती उसे आप एक ओर छोड़ दें। परन्तु मात्र एक जाति की पुस्तक होने से अपनी जातिगत श्रेष्ठता के दंभ में आप कोटि–कोटि जनों की आदरणीय पुस्तक (कुरआन) को जाने–समझे बिना उसकी उपेक्षा या निंदा करेंगे? यह ता सभ्यजन के योग्य आचार नहीं है। फिर आपका कर्त्तव्य है कि मुसलमान और उसके आचरण से कुरआन को न जाचें। यह दोषपूर्ण निरीक्षण होगा, बल्कि कुरआन शरीफ से मुसलमान को जांचें।

. शेष पृष्ठ 19

अंतर्राष्ट्रीय समाचार

— डॉ0 मुइद अशरफ नदवी

इसराईली प्रेजीडेन्ट शमऊन पेरीज को उनकी औकात बताने पर तुर्की में प्रधानमंत्री का बड़े विजयता के रूप में भव्य स्वागत

इस्तंबौल– तुर्की के प्रधानमंत्री तय्यब अरदगान का अपने देश तुर्की पहुँचने पर एक बड़े जियता के रूप में भव्य स्वागत हुवा, श्री अरदगान ने दाऊद्स में होने वाली ''वर्ड इक्नामिकस'' फोरम की सरबराह कानफ्रेंस में इसराईली प्रेजीडेन्ट शमऊन पेरीज को उनकी वास्तविकता दिखाते हुवे उनकी आँखों में आँखें डाल कर साफ शब्दों में कह दिया कि आप अच्छी तरह जानते हैं कि इन्सानों को मौत के घाट किस तरह उतारा जाता है।

इसराईली प्रेजीडेन्ट ने ''वर्ड इकनामिक्स फोरम'' में गज्जह में इसराईली अत्याचार का पूरी ताकत से डिफेन्स करते हुवे ऊँची आवाज में तुर्की के प्रधान मंत्री की ओर इशारह करते हुवे प्रश्न किया था कि यदि इस्तंबौल पर हर रात राकिट आकर गिरें तो श्री अरदगान क्या करेंगे तुर्की के प्रधानमंत्री अरदगान जो उस समय श्री पेरीज के पास ही संयुक्त राष्ट्र के जनरल सिकरेट्री बानकी भून और अरब लीग के अध्यक्ष ऊमर मूसा के साथ बैठे हुवे थे, इस प्रश्न पर उनके चेहरे का रंग बदल गुया, उन्होंने इसराईली प्रेजीडेन्ट की आँखे डाल कर जवाब दिया कि बात जब मारने की आती है तो आपको अच्छी तरह मालूम है कि किस तरह मौत के घाट उतारा जाता है।

तुर्की प्रधान मंत्री जब दाऊद से इस्तंबौल के अतातुरूक हवाई अड्डे पर पहुंचे तो हवाई अड्डे पर हजारों लोग तुर्की और फिलिस्तीन के झण्डे लहराते हुवे अपने नेता के स्वागत के लिये मौजूद थे जो उनका स्वागत करते हुवे कह रहे थे कि तुर्की को तुम पर फख्र (अभिमान) है, प्रधानमंत्री अरदगान हवाई अड्डे पर जन सभा से संबोधित करने के बअद प्रेस कानफ्रेंस में कहा कि हमारे अवाम को तुर्की के किसी भी प्रधान मंत्री से ऐसे ही रद्दे अमल (प्रति क्रिया) की उम्मीद होगी, यह हमारे देश की इज्जत और वकार (प्रतिष्ठा) का सवाल है, लिहाजा मेरा रद्दे अमल बिल्कुल वाजेह (स्पस्ट) होता था, मैं किसी को भी इस वकार (प्रतिष्ठा) को खास–तौर से देश के वकार (प्रतिष्ठा) को मसमूम (विषाक्त) करने की इजाजत नहीं दे सकता, उन्होंने कहा कि हम इसराईल के अवाम या यहूदियों के खिलाफ नहीं हैं बल्कि इसराईल के मनेजमेन्ट के खिलाफ हैं।

आजाद कोसोवो

युगोसलाविया के विघटन के एक लम्बे खूनी अध्याय का समापन कोसोवो की स्वतंत्र राष्ट्र की घोष्णा के साथ हो गया। सर्बिया ने इस पर त्वरित प्रतिक्रिया देते हुए इसे झूठा राष्ट्र करार दिया और इसका समर्थन करने पर अमेरिका की निंदा की है। कोसोवो के स्वतंत्र होने की घोषणा संसद में करते हुए प्रधानमंत्री हाशिम थाची ने कहा कि ''हम कोसोवो का स्वतंत्र और संप्रभु राज्य घोषित करते हैं। यह घोषणा जनता की इच्छा का प्रतिबिम्ब है।'

संसद में इस मौके पर सदन में मौजूदा सभी 109 सदस्यों ने हाथ उठाकर आजादी के प्रस्ताव का समर्थन किया। वोट के बाद स्पीकर जैकप क्राशनिकी ने घोषणा की कोसोवो स्वतंत्र है और एक अलग राज्य है। उधर, बेलग्रेड में सर्बिया के प्रधानमंत्री वोजिस्लाव कोस्तुनिका ने इसकी आलोचना की है और इसे अवैध करार दिया। इस बीच रूस ने संयुक्त राष्ट्र का आह्वान किया है कि वह कोसोवो की घोषणा को रद्द करार दे। रूस का कहना है कि कोसोवो के इस कदम से क्षेत्र में जातीय हिंसा फिर भड़क सकती है।

❑❑